UPTET (SUPERTET) BEST NOTES

Visit Our
YouTube Channel

Download Our App

SACHIN CHOUDHARY

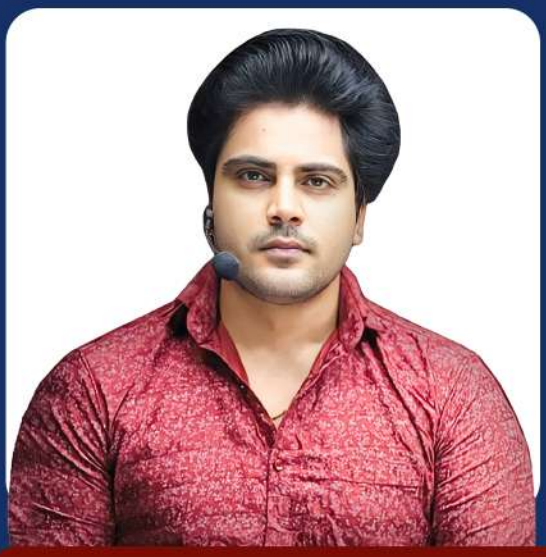

SACHIN CHOUDHARY

About the Author

In the realm of Education, there are rare individuals who not only impart knowledge but also ignite a flame of Ambition and Empowerment within their students. Sachin Choudhary sir stands tall among these luminaries, a Renowned and Experienced teacher.

He has qualified many Government Exams. Not only has he been a part of many government teaching training programs but also a guiding light for his students. Many of his students have cracked numerous Government Exams. A lot of his students are currently working in different Government Departments. As teaching is his passion, his aim has always been to provide quality education with the best content. He believes in hard work and honesty.

SACHIN ACADEMY

हिन्दी

HINDI

UPTET & SUPERTET BEST NOTES PAPER-1 & 2 HINDI BY SACHIN ACADEMY

वर्ण

भाषा की सबसे छोटी मौखिक ध्वनि या उसके लिखित रूप को वर्ण या अक्षर कहा जाता है।

स्वर

स्वर (vowel) उन ध्वनियों को कहते हैं जो बिना किसी अन्य वर्णों की सहायता के उच्चारित किये जाते हैं। स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण, स्वर कहलाते हैं। हिन्दी भाषा में मूल रूप से ग्यारह स्वर होते हैं। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ आदि । हिन्दी भाषा में ऋ को आधा स्वर (अर्धस्वर) माना जाता है, अत: इसे स्वर में शामिल किया गया है।

- **अग्रस्वर :-** जिन स्वरों के उच्चारण में जिह्वा का आगे का भाग सक्रिय होता है उसे अग्रिश्वर कहते हैं। जैसे- ई, ए, ऐ, अ, इ
- **पश्चस्वर :-** जिन स्वरों के उच्चारण में जिह्ववा का पीछे का भाग सक्रिय होता है उससे पश्च स्वर कहा जाता है। जैसे- आ, उ, ऊ, ओ, औ, ऑ।
- **संवृत स्वर :-** संवृत का अर्थ होता है" कम खुलना " अर्थात जिन स्वरों के उच्चारण में मुख कम खुलता है उन्हें संवृत स्वर कहते हैं। जैसे- ई, ऊ

उच्चारण के आधार पर स्वर के भेद

- **ह्रस्व स्वर :-** जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय अर्थात कम समय लगता है। उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। जैसे- अ, इ, उ, ऋ ।
- **दीर्घ स्वर :-** जिन स्वरों के उच्चारण में 2 मात्राओं का या 1 मात्रा से अधिक का समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। जैसे- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ ।
- **लुप्त स्वर :-** जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्राओं से भी अधिक समय लगे लुप्त स्वर कहलाते हैं। जैसे- ओ३म

स्वर

स्वर प्रकार	स्वर
ह्रस्व स्वर	अ, इ, उ, ऋ
दीर्घ स्वर	आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
अर्ध स्वर	इ, उ, आ, ऐ, औ
वृत्ताकार स्वर	आ, उ, ऊ, ओ, औ
मूल स्वर	अ, इ, उ, ऋ
अग्र स्वर	इ, ई, ए, ऐ
मध्य स्वर	अ
पश्च स्वर	आ, उ, ऊ, ओ, औ, ऑ
संवृत स्वर	ई, ऊ

व्यंजन

स्वरों की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते हैं।

हिंदी वर्णमाला में कुल मूल व्यंजनो की संख्या 33 है।

व्यंजन के भेद

उच्चारण की दृष्टि से व्यंजन चार प्रकार के होते हैं।

- स्पर्श व्यंजन
- अन्तःस्थ व्यंजन
- उष्म व्यंजन
- संयुक्त व्यंजन

(1) स्पर्श व्यंजन :- कंठ तालव्य, मुर्धा, दंत तथा ओष्ठ के परस्पर स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं।

स्पर्श व्यंजनों की संख्या 25 है। इसमें शुरू के 5 वर्ग आते हैं जिसमें

- क वर्ग में - क ख ग घ ङ,
- च वर्ग में - च, छ, ज, झ, ञ
- ट वर्ग में - ट, ठ, ड, ढ, ण
- त वर्ग में - त, थ, द, ध, न
- प वर्ग में - प, फ, ब, भ, म

(2) अन्तःस्थ व्यंजन :- जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों और व्यंजनों के बीच स्थित हो उसे अन्तःस्थ व्यंजन कहते हैं। यानि जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय भीतर से बाहर की ओर शक्ति लगती है

अन्तःस्थ व्यंजनों की संख्या चार है।

य, र, ल, व

(3) उष्म व्यंजन :- जिन व्यंजनों के उच्चारण में हवा के रगड़ खाने से ऊष्मा निकलती है उसे उष्म व्यंजन कहते हैं।

उष्म व्यंजनों की संख्या चार है।

श, ष, स, ह

(4) संयुक्त व्यंजन :- दो व्यंजनों के मेल से बना व्यंजन संयुक्त व्यंजन कहलाता है।

संयुक्त व्यंजन की संख्या चार है।

क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

- **क्ष = क् + ष**
- **त्र = त् + र**
- **ज्ञ = ज् + ञ**
- **श्र = श् + र**

श्वास वायु के आधार पर वर्णों का वर्गीकरण

- **अल्पप्राण**
- **महाप्राण**

अल्पप्राण :- जिन वर्णों के उच्चारण में श्वास वायु कम मात्रा में मूख से बाहर निकलती है। वे अल्पप्राण ध्वनियाँ कहलाती है । क वर्ग, च वर्ग आदि का पहला, तीसरा, पाँचवाँ वर्ण (क, ग, ङ, च, ज, ञ, आदि) तथा य, र, ल, व और सभी स्वर अल्पप्राण है।

महाप्राण :- जिन वर्णो के उच्चारण में श्वास वायु अधिक मात्रा में मुख से बाहर निकलती है उन्हें महाप्राण ध्वनियाँ कहते है। प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण (ख, घ, छ, झ आदि) तथा श, ष, स, ह महाप्राण है।

हिंदी के वर्णों का उनके उच्चारण स्थान के आधार पर वर्गीकरण

- **कण्ठ्य वर्ण:-** जिन वर्णो का उच्चारण कंठ से होता है। कंठ से उच्चारित वर्ण जैसे - अ, आ (स्वर), क, ख, ग, घ, ङ (व्यंजन) और विसर्ग (:)
- **तालव्य वर्ण :-** जिन वर्णों के उच्चारण में जिहवा का मध्य भाग तालु से स्पर्श करता है। उन्हें तालव्य वर्ण कहते है। तालु से उच्चारित वर्ण जैसे - इ, ई (स्वर), च, छ, ज, झ, ञ, य, श (व्यंजन)
- **मूर्द्धन्य वर्ण :-** जिन वर्णों के उच्चारण मूद्धा से होता है। उन्हें मूर्द्धन्य वर्ण कहते है। मूर्द्धा से उच्चारित वर्ण जैसे ऋ (स्वर), ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष (व्यंजन)
- **दन्त्य वर्ण :-** जिन वर्णो के उच्चारण में जिहवा का अग्र भाग दन्त से स्पर्श करता है । उन्हें दन्त्य वर्ण कहते है । दन्त से उच्चारित वर्ण जैसे- लृ, त, थ, द, ध, न, ल, स (सभी व्यंजन)

- **ओष्ठ्य वर्ण :-** जिन वर्णों के उच्चारण में दोनों होठ स्पर्श करते है। उन्हें ओष्ठ्य वर्ण कहते है। ओष्ठ से उच्चारित वर्ण जैसे- उ, ऊ (स्वर), प, फ, ब, भ, म (व्यंजन)
- **नासिक्य वर्ण :-** जिन वर्णों का उच्चारण मुँह और नाक दोनों से होता है। उन्हें नासिक्य वर्ण कहते है। नासिका से उच्चारित वर्ण जैसे -अं, ङ, ञ, ण, न, म
- **कंठतालव्य वर्ण :-** जिन वर्णो के उच्चारण में कंठ तथा तालु दोनों का सहयोग होता है। उन्हें कंठतालव्य वर्ण कहते है। कंठ तालु से उच्चारित वर्ण जैसे - ए, ऐ
- **कंठोष्ठ्य वर्ण :-** जिन वर्णो के उच्चारण में कंठ तथा ओष्ठ दोनों का सहयोग होता है। उन्हें कंठोष्ठ्य वर्ण कहते है। कंठ ओष्ठ से उच्चारित वर्ण जैसे - ओ, औ
- **दन्तोष्ठ्य वर्ण :-** जिन वर्णों के उच्चारण में दन्त तथा ओष्ठ दोनों का सहयोग होता है। उन्हें दन्तोष्ठ्य वर्ण कहते है । दन्त - ओष्ठ से उच्चारित वर्ण जैसे - व
- **वर्त्स्य वर्ण :-** जिन अरबी-फ़ारसी वर्णो के उच्चारण ऊपर वाले मसूड़ों के कठोरतम भाग से होते है, उन्हें वर्त्स्य वर्ण कहते है । वर्त्स्य से उच्चारित वर्ण जैसे - फ़ और ज़।
- **जिह्वामूलक वर्ण :-** जिन अरबी - फ़ारसी वर्णों का उच्चारण जिह्वा के पीछे के भाग से होता है। उन्हें जिह्वामूलक वर्ण कहते है । जिह्वामूलक से उच्चारित वर्ण जैसे - क़, ख़ और ग़।
- **अलिजिह्वा/काकल्य वर्ण :-** जिन वर्णों के उच्चारण में मुख खुला रहता है, तथा कंठ को खोलकर झटके से बाहर निकलती है। उन्हें अलिजिह्वा वर्ण या काकल्य वर्ण कहते है। जैसे - ह।

वर्णों के उच्चारण स्थान की तालिका

उच्चारण स्थान	वर्ण / स्वर
कंठ (कण्ठ्य)	अ, आ, क वर्ग (क, ख, ग, घ, ङ) और विसर्ग
तालु (तालव्य)	इ, ई, च वर्ग (च, छ, ज, झ, ञ), य
मूर्द्धा (मूर्द्धन्य)	ऋ, ट वर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण), र, ष

दन्त (दन्त्य)	ऌ, त वर्ग (त, थ, द, ध, न), ल, स
ओष्ठ (ओष्ठ्य)	उ, ऊ, प वर्ग (प, फ, ब, भ, म)
नासिका (नासिक्य)	अं, ङ, ञ, ण, न, म
कंठ तालु (कंठतालव्य)	ए, ऐ
कंठ ओष्ठ (कंठोष्ठ्य)	ओ, औ
दन्त-ओष्ठ (दन्तोष्ठ्य)	व
स्वर यंत्र (अलिजिह्वा)	ह

वाक्य

भावों और विकारों को पूर्णत: व्यक्त करने वाले सार्थक शब्द समूहों को वाक्य कहते हैं।

वाक्य के अंग

- उद्देश्य
- विधेय

उद्देश्य :- वाक्य में जिस व्यक्ति या वस्तु के सम्बन्ध में कुछ बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते है । उद्देश्य में कर्ता तथा उसका विशेषण होता है।

- जैसे:- सोहन खेल रहा है।
- इस वाक्य में सोहन उद्देश्य है क्योकि इसके बारे में कुछ बताया जा रहा है।

विधेय :- उद्देश्य के विषय में जो कुछ भी बताया जाता है, वह विधेय होता है। इसमें क्रिया कर्म तथा उनका विस्तार होता है।

- उदाहरण - ये कवि अच्छी कविताएं लिखता है।
- इस वाक्य में ये कवि – उद्देश्य है, क्योंकि उसके विषय में कुछ कहा जा रहा है।
- कविताएँ लिखता है - विधेय है, क्योंकि इसमें वे बातें हैं, जो कवि के विषय में कही गई हैं।

अर्थ के आधार पर वाक्यों के प्रकार

- **विधानवाचक वाक्य** :- वे वाक्य जिनमें क्रिया के होने या करने की बात कही गई हो, उन्हें विधानवाचक वाक्य कहते हैं।

  उदाहरण

  - सूर्य पूरब से निकलता है।
  - बच्चे रोज विद्यालय जाते हैं।
- **निषेधवाचक वाक्य** :- वे वाक्य जिनमें क्रिया के न होने या न करने का बोध हो, उसे निषेधवाचक वाक्य या नकारात्मक वाक्य कहते हैं।

  उदाहरण

  - बच्चे रोज स्कूल नहीं जाते हैं।
  - हम अब घूमने नहीं जाएंगे।
- **प्रश्नवाचक वाक्य** :- जिन वाक्यों में प्रश्न किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं।

  उदाहरण

  - आज तुमने क्या खाया ?
  - आजकल वह क्यों परेशान रहते है ?
- **संकेतवाचक वाक्य** :- जिन वाक्यों में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर होता है या किसी शर्त की पूर्ति का विधान किया जाता है, उन्हें संकेतवाचक वाक्य कहते हैं।

  उदाहरण

  - यदि वह समय पर स्टेशन पहुँच गया होता तो उसकी गाडी न निकलती ।
  - अचे काम करोगे तो अच्छा ही फल मिलेगा।
- **संदेहवाचक वाक्य** :- जिन वाक्यों में संदेह या संभावना पाई जाए, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं।

उदाहरण

- शायद आज बारिश हो जाए ।
- अब तक भैया घर पहुँच चुके होंगे।

❖ **इच्छावाचक वाक्य :-** जिन वाक्यों में वक्ता की इच्छा, कामना, शुभकामना, आशा, आशीर्वाद आदि के भाव प्रकट हों, उन्हें इच्छावाचक वाक्य कहते हैं।

उदाहरण

- ईश्वर आपकी मनोकामना पूरी करे।
- आपकी यात्रा मंगलमय हो ।

❖ **आज्ञावाचक वाक्य :-** जिन वाक्यों से आज्ञा, अनुरोध, आदेश, प्रार्थना आदि के भाव प्रकट हों, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं।

उदाहरण

- आप मेरे पास आकर बैठिये ।
- कृपया आप यहाँ हस्ताक्षर कर दे।

❖ **विस्मयादिवाचक वाक्य :-** जिन वाक्यों में विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा, क्रोध आदि मनोभावों का प्रकट होना पाया जाए, उन्हें विस्मयादिवाचक वाक्य कहते हैं।

उदाहरण

- वाह! इसे खा कर मजा आ गया।
- हाय! बेचारा भूका ही सो गया ।

रचना के आधार पर वाक्यों के प्रकार

❖ सरल वाक्य
❖ संयुक्त वाक्य
❖ मिश्रित वाक्य

सरल वाक्य :- जिन वाक्यों में केवल एक ही उद्देश्य तथा एक ही विधेय हो, उन्हें सरल वाक्य कहते हैं।

जैसे-

- राम विद्यालय जाता है।
- सूर्य पूरब से निकलता है।
- वह बाजार जाकर फल लाया।

संयुक्त वाक्य :- जिन वाक्यों में दो या दो से अधिक उपवाक्य किंतु, और, परंतु, तथा, अन्यथा या आदि समुच्चयबोधक अव्ययों से जुड़े हों, उन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं।

जैसे-

- बच्चे विद्यालय जाते है और मन लगाकर पढ़ते है।
- वह एक गरीब आदमी परंतु किसी से मांगता नहीं है ।
- माता जी दुखी ही नहीं बल्कि नाराज भी हैं ।
- मुझे गाड़ी पकड़नी थी, इसलिए सुबह उठना पड़ा।
- आज मैच जीतने के आसार थे किंतु बारिश हो गई ।
- आप दूध पी लीजिए या खीर खा लीजिए।

मिश्रित वाक्य:- जो वाक्य दो या अधिक उपवाक्यों से बना हो तथा जिसमें एक उपवाक्य प्रधान तथा दूसरा उस पर आश्रित हो, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं। मिश्र वाक्य की पहचान है कि दो उपवाक्यों में से एक उपवाक्य हमेशा अपूर्ण होता है। दोनों उपवाक्य मिलकर ही पूर्ण अर्थ प्रकट करते हैं।

जैसे-

- जितना परिश्रम करोगे, उतनी ही सफलता प्राप्त करोगे ।
- इस वाक्य में प्रधान वाक्य है- 'सफलता प्राप्त करोगे' और यह सफलता आश्रित है - परिश्रम के परिमाण पर।

प्रधान उपवाक्य - उतनी ही सफलता प्राप्त करोगे ।

आश्रित उपवाक्य - जितना परिश्रम करोगे

- प्रधान वाक्य में वह बात कही जाती है, जो बोलने या लिखनेवाला बताना चाहता है। आश्रित में, वह कारण, दशा, अवस्था या बात होती है।

मिश्रित वाक्य की पहचान :- मिश्र वाक्य में कि, जो वह, जिसे उसे, ऐसा जो, वही जिसे, यदि तो जैसे व्यधिरकण योजक होते हैं।

कुछ उदहारण

- रेशमा इसलिए स्कूल नहीं गई क्योंकि वह बीमार है।
- जो विद्यार्थी परिश्रमी होता वह अवश्य सफल होता है।
- पिता जी ने कहा था कि जल्दी घर आ जाना।

हिंदी की ध्वनियों के पारस्परिक अंतर की जानकारी

विशेष रुप से स, ष, श ब, वड, ढ, ड, ढ, ङ छ, क्ष और न_____ ण की जानकारी

ड, ढ, तथा ड़ ढ़ में अंतर

- ड़, ढ़ - इनका प्रयोग शब्दों के बीच में या अंत में किया जाता है शुरू में नहीं किया जाता है। जैसे :- लड़ना, पढ़ना, सड़क, पेड़, गढ़ना, पढ़ाई। आदि
- ड, ढ - इनका प्रयोग शब्द के शुरू में होता है। जैसे - डायरी, ढलान, ढोलक आदि
- ङ - एक पंचमाक्षर है जिसका उच्चारण नाक से होता है इसका प्रयोग शब्दों के ऊपर बिंदु के रूप में होता। जैसे रङ्ग रंग, कङ्गन- कंगन
- (ं)अनुस्वार के उच्चारण में नाक से अधिक साँस निकलती है और न या म की ध्वनि आती है। जैसे- घण्टा - घंटा, सम्बन्ध - संबंध, आदि।
- 'ड' अल्पप्राण तथा 'ढ' महाप्राण ध्वनि है।
- 'ङ' और ञ् का उच्चारण स्वतंत्र वर्ण के रूप में नहीं होता है।

स, ष, श, का अंतर

उच्चारण स्थान की दृष्टि से अंतर

- स- दंत - इसमें हमारी जिह्वा दाँतों के निचले भाग को स्पर्श करती है। जैसे :- सरल, समय, सहज, सूचना, आदि।
- ष - मूर्धन्य - जब जीभ तालु के पीछे वाले भाग से टकराती है तो उससे जो आवाज़ निकलती है तो उसे ही मूर्धा बोलते हैं। जैसे:- भाषा, भाषण, विशेष, आदि

- श - तालव्य - जब जिह्वा हमारे तालु से टकराती है तो उसे तालव्य कहते हैं। जैसे:- शलजम, शरीर, शिक्षा, शुरू, आदि ।

प्रयोग की दृष्टि से अंतर

- जहाँ पर श,ष दोनों एक साथ आए तो वहाँ पहले तालव्य (श) आता है। उसके बाद मूर्धा (ष) आता है। जैसे:- विशेषज्ञ, विशेषण, विशेषता आदि।
- तालव्य श का प्रयोग :- इसका उच्चारण तालु से होता है। जिसके कारण इसे तालव्य श कहते हैं। जैसे:- शक्तिशाली, शायद,, शोषण, शामिल, आदि ।
- स- एक सामान्य वर्ण है जिसका उच्चारण स्थान दंत है । स का प्रयोग इस प्रकार है :- जैसे - सागर, सरदार, सरल, साथ आदि
- श, ष तथा स सभी ऊष्म व्यंजन हैं।
- सामान्य रूप से 'स' का प्रयोग तत्सम शब्दों में होता है।
- 'ष' वर्ण उच्चारण में नहीं है, पर लेखन में है।

व और ब का अंतर

- व - एक दंतोष्ठ वर्ण है । इसका प्रयोग है जैसे- विनाश, वाक्य वाचक, वह, आदि ।
- ब- एक ओष्ठ वर्ण है ब का प्रयोग सामान्य शब्द में एवं उपसर्ग के रुप में भी इसका प्रयोग होता है। जैसे - बाल, बलवान, बात आदि
- 'ब' वर्ण का प्रयोग संस्कृत में बहुत कम तथा हिन्दी में बहुत अधिक होता

न ण में अंतर

न का प्रयोग

- न - एक स्वतंत्र व्यंजन है जबकि ण पंचमाक्षर है जो नासिक्य वर्ण है।
- न का प्रयोग अनुस्वार के रुप में किया जाता है जैसे- रंग, पतंग, निबंध आदि

ण - का प्रयोग- जैसे :- प्रणाम, ऋण, कृपाण आदि

- 'ण' का उच्चारण स्वतंत्र वर्ण के रूप में होता है।

- **'ण' और 'न' में मुख्य अंतर यह है कि जिन तत्सम शब्दों में 'ण' होता है, उनके तद्भव के रूप में 'ण' के स्थान पर 'न' प्रयुक्त होता है।**

छ, क्ष में अंतर

- **छ एक स्वतंत्र व्यंजन है जबकि क्ष एक संयुक्त व्यंजन है।**
- **छ तालव्य वर्ण है। जैसे :- छात्र, छत, छड़ी आदि**
- **जबकि क्ष कंठ और मूर्धन्य वर्ण है इसमें हल्का क और ष की मिलीजुली ध्वनि रहती है। जैसे:- कक्षा, परीक्षा, क्षेत्र आदि**

अनुस्वार (•)

अनुस्वार स्वर के बाद आने वाला व्यंजन है। इसकी ध्वनि नाक से निकलती है। हिंदी भाषा में बिंदु अनुस्वार (•) का प्रयोग विभिन्न जगहों पर होता है।

पंचम वर्णों के स्थान पर

अनुस्वार (•) का प्रयोग पंचम वर्ण (ङ, ञ, ण्, न्, म् - ये पंचमाक्षर कहलाते हैं) के स्थान पर किया जाता है। जैसे -

- **गङ्गा - गंगा**
- **चञ्चल - चंचल**
- **झण्डा - झंडा**
- **गन्दा - गंदा**
- **कम्पन - कंपन**

अनुस्वार शब्द - संबंध, सुन्दर, संस्कृति, संपूर्ण, आनंद आदि।

अनुनासिक

- अनुनासिक स्वरों के उच्चारण में मुँह से अधिक तथा नाक से बहुत कम साँस निकलती है। इन स्वरों पर चन्द्रबिन्दु (ँ) का प्रयोग होता है जो की शिरोरेखा के ऊपर लगता है।
- जैसे- गाँव आँख, कुआँ, माँ, आदि।

अनुनासिक शब्द

- चाँद, काँच, अँधेर, पहुँच, ऊँचाई, टाँग, पाँच, साँस, मँहगाई, आदि
- बिंदु को हिंदी में अनुस्वार और चंद्रबिंदु को अनुनासिका कहा जाता है।

अनुस्वार और अनुनासिका (चंद्रबिंदु) में अंतर

- अनुनासिका स्वर है जबकि अनुस्वार मूलत: व्यंजन।
- अनुनासिका (चंद्रबिंदु) को परिवर्तित नहीं किया जा सकता, जबकि अनुस्वार को वर्ण में बदला जा सकता है।
- अनुनासिका का प्रयोग केवल उन शब्दों में ही किया जा सकता है जिनकी मात्राएँ शिरोरेखा से ऊपर न लगीं हों। जैसे अ, आ, उ ऊ, उदाहरण के रूप में - हँस, चाँद, पूँछ
- शिरोरेखा से ऊपर लगी मात्राओं वाले शब्दों में अनुनासिका के स्थान पर अनुस्वार अर्थात बिंदु का प्रयोग ही होता है. जैसे- गोंद, कोंपल, जबकि अनुस्वार हर तरह की मात्राओं वाले शब्दों पर लगाया जा सकता है

विराम चिन्ह

बोलते समय हम अपने भावों को पूर्ण रूप से स्पष्ट करने के लिए आवश्यकतानुसार रुकते हैं। यदि हम बिना रुके बोलते चले जाएँ तो भाषा की अभिव्यक्ति पूर्ण रूप से नहीं हो पाती। इसमें अर्थ भी अलग हो जाता है। यानी जो हम कहना चाह रहे होते है वो सही से अभिव्यक्त नहीं हो पाता। इस रुकावट को ही विराम कहते हैं।

इस विराम को प्रदर्शित करने के लिए व्याकरण में कुछ चिह्न निर्धारित किए गए हैं, इन्हीं चिह्नों को विराम चिह्न कहते हैं।

जैसे-

- रोको, मत जाने दो।
- रोको मत, जाने दो।
- इन दोनों वाक्यों को पढ़कर देखिये कि बोलते समय बीच में रुकना कितना आवश्यक है।

विराम चिन्ह के प्रकार

- पूर्ण विराम (।)
- अर्ध विराम (;)
- अल्प विराम (,)
- प्रश्नवाचक चिह्न (?)
- विस्मयादिबोधक चिह्न (!)
- कोष्ठक ( ),{ }, []
- उद्धरण चिन्ह या अवतरण चिन्ह (“.....”) (’.....’)
- निर्देशक सूचक चिन्ह (-)
- योजक चिह्न (-)
- विवरण चिह्न (:-)
- उपविराम (:)
- लाघव चिन्ह (०)
- हंसपद या त्रुटिबोधक चिन्ह (^)

विराम चिन्ह का प्रयोग

पूर्ण विराम का प्रयोग (।)

वाक्य के अंत में प्रायः पूर्ण विराम लगाया जाता है। अर्थात जब वाक्य समाप्त हो जाता है तो पूर्ण विराम चिन्ह का प्रयोग करते हैं।

उदाहरण

- वह एक नेक इंसान है।
- हम कल दिल्ली घूमने जाएगी ।

अर्ध विराम का प्रयोग (;)

वाक्य में जहाँ पूर्ण विराम से कम किंतु अल्प विराम से अधिक रुकने की आवश्यकता हो, वहाँ अर्ध विराम का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण

- मैं उसे पसंद करता हूँ; वह मुझसे नफरत करता है।
- सूर्योदय हो गया; चिड़िया चहकने लगी और कमल खिल गए ।

अल्प विराम (,)

जब पूर्ण विराम से कम समय के लिए वाक्य के बीच में रुकना पड़े, तो अल्पविराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है;

उदाहरण

- भारत में गेहूँ, चना, बाजरा, मक्का, आदि बहुत सी फ़सलें उगाई जाती हैं।
- वह विद्यालय न जा सका, क्योंकि वह अस्वस्थ था ।

प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग (?)

जिस वाक्य में कोई प्रश्न पूछा गया हो उसके अंत में यह चिह्न लगाया जाता है।

उदाहरण

- क्या मैं तुम्हारे घर आ सकता हूँ?
- आपका क्या नाम है ?

विस्मयाधिबोधक चिह्न (!)

आश्चर्य, शोक, हर्ष आदि भावों को प्रकट करने वाले शब्दों को विस्मयादि बोधक चिह्न कहते हैं।

उदाहरण

- वाह! हम यह मैच भी जीत गए ।

- अरे! तुम यहाँ क्या कर रहे हो?

कोष्ठक ( ),{ },[ ]

इसका प्रयोग साधारणतया वाक्य के बीच में किया जाता है। यदि वाक्य में आए शब्द के संबंध में उनसे अलग कोई जानकारी दी जाती है तो उसे कोष्ठक का प्रयोग करके अलग कर दिया जाता है।

उदाहरण

- कालिदास (संस्कृत के महाकवि) को सभी जानते हैं।
- जवाहरलाल नेहरू(प्रथम प्रधानमंत्री) को बच्चे बहुत प्यार करते थे।
- उद्धरण चिन्ह या अवतरण चिन्ह का प्रयोग (" .....")
- किसी व्यक्ति की कही हुई या लिखी हुई बात को ज्यों का त्यों लिखने के लिए उद्धरण या अवतरण चिन्ह का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण

- लोकमान्य तिलक ने कहा था, "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।
- गांधी जी ने कहा है, "सत्य ही ईश्वर है ।"

निर्देशक सूचक चिन्ह का प्रयोग (-)

निर्देशक चिन्ह का प्रयोग निम्न स्थितियों में होता है।

- किसी बात को उदाहरण द्वारा स्पष्ट करने के लिए
- निम्नलिखित शब्द के वाक्य के अंत में
- कथन के बाद
- संवाद लिखते समय

उदाहरण

- अक्षय-कहिए क्या बात है ?
- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-
- राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी - भगतसिंह को कौन नहीं जानता ।

योजक चिह्न का प्रयोग (-)

इसका उपयोग दो शब्दों को जोड़ने में होता है। इसका प्रयोग द्वंद्व समास में किया जाता है।

उदाहरण

- नेहा खेलते-खेलते गिर गई।
- रात-दिन

विवरण चिह्न का प्रयोग (:-)

वाक्यांशों के विषय में कुछ सूचना, निर्देश आदि देना हो तो विवरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण

- भाषा के दो रूप हैं :- 1. मौलिक भाषा 2. लिखित भाषा

उपविराम का प्रयोग (:)

इसका प्रयोग भी विवरण- चिह्न की तरह ही होता है। किसी के बारे में बताने के लिए अर्थात परिचय देने के लिए प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण

- लघुकथा : नए युग की मार
- कामायनी : एक महाकाव्य

लाघव चिह्न का प्रयोग (०)

शब्दों का संक्षिप्त रूप लिखने के लिए लाघव चिह्न का प्रयोग होता है।

उदाहरण

- डॉ० = डॉक्टर
- पं० = पंडित

- ई० = ईस्वी

त्रुटि पूरक या हंसपद चिह्न (^)

जब किसी वाक्य या शब्द में कुछ लिखने से शेष रह जाए तो उसको ठीक स्थान पर लिखने के लिए त्रुटि पूरक चिह्न या हंसपद का प्रयोग होता है।

उदाहरण-

उत्तर

- हिमालय भारत के ^ में है।

देश

- भगत सिंह ने ^ के लिए प्राण दे दिए।

विलोम शब्द

जो शब्द किसी दूसरे शब्द का उल्टा अर्थ बताते हैं, उन्हें विलोम शब्द या विपरीतार्थक शब्द कहते है। जैसे- सीधा - उल्टा, सही - गलत, आय - व्यय, आजादी - गुलामी, नवीन - प्राचीन शब्द एक दूसरे के उलटे अर्थ वाले शब्द है।

विभिन्न परीक्षाओ में पूछे गए विलोम शब्द

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अमृत	विष	अनुग्रह	विग्रह
अन्धकार	प्रकाश	अर्जन	वर्जन
आलस्य	स्फूर्ति	अकाल	सुकाल

आर्द्र	शुष्क	अनुज	अग्रज
आकाश	पाताल	अनुग्रह	विग्रह
आश्रित	निराश्रित	अरुचि	रुचि
आदान	प्रदान	आय	व्यय
आयात	अनुलोम	आधुनिक	आदान
निर्यात	नास्तिक	अर्पण	ग्रहण
अति	अल्प	आहार	निराहार
आकर्षण	विकर्षण	अनुलोम	प्रतिलोम
आयात	निर्यात	आधुनिक	प्राचीन
अंत	अनंत	आदान	प्रदान
अपमान	सम्मान	अतिथि	आतिथेय
आशा	निराशा	अवनि	अम्बर
आजादी	गुलामी	अवनति	उन्नति

पर्यायवाची शब्द / समानार्थी शब्द

वे शब्द जिनका अर्थ एक समान होता हैं पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। पर्यायवाची शब्द को हम समानार्थी शब्द भी कहते है ।

विभिन्न परीक्षाओ में पूछे गए पर्यायवाची शब्द

शब्द	पर्यायवाची / समानार्थक शब्द
आभूषण	विभूषण, भूषण, गहना, अलंकार
अहंकार	गर्व, अभिमान, दर्प, मद, घमंड
आकाश	नभ, गगन, अम्बर, व्योम, अनन्त, आसमान
कोमल	नाजुक, नरम, मृदु, सुकुमार, मुलायम
कपड़ा	चीर, वसन, पट, वस्त्र, अम्बर, परिधान
गुरु	शिक्षक, बड़ा, भारी, वृहस्पति
गृह	घर, सदन, गेह, भवन, धाम, निकेतन, निवास
चंद्रमा	चन्द्र, शशि, हिमकर, राकेश, रजनीश, निशानाथ, सोम, मयंक
झरना	प्रताप, उत्स, निर्झर, सोता, श्रोत
दुःख	पीड़ा, कष्ट, व्यथा, वेदना, संताप, शोक, खेद, पीर, लेश
दूध	दुग्ध, क्षीर, पय
दुष्ट	पापी, नीच, दुर्जन, अधम, खल, पामर
पहाड़	पर्वत, गिरी, अचल, नग, भूधर, महीधर
पक्षी	खग, चिडिया, गगनचर, पखेरू, विहंग, नभचर

पुष्प	फूल, सुमन, कुसुम, मंजरी, प्रसून
पृथ्वी	धरती, धरा, भू, भूमि, जमीन, वसुंधरा, धरणी
बादल	मेघ, घन, जलधर, जलद, वारिद, नीरद, सारंग
वृक्ष	पेड़, पादप, विटप, तरु, गाछ
मछली	मीन, मत्स्य, जलजीवन, शफरी, मकर
यमराज	धर्मराज, यम, अन्तक, सूर्यपुत्र, दंडधर
रात	रात्रि, रैन, रजनी, निशा, यामिनी, तमी, निशि, यामा
राजा	नृप, भूप, भूपाल, नरेश, महीपति, अवनीपति
साँप	सर्प, नाग, विषधर, उरग, पवनासन
समुद्र	सागर, पयोधि, उदधि, पारावार, नदीश, जलधि
सूर्य	रवि, सूरज, दिनकर, प्रभाकर, आदीत्य, भास्कर, दिवाकर
संसार	जग, विश्व, जगत, लोक, दुनिया
हाथी	गज, सिंधु, हस्ती, नाग, मतंग, गजेन्द्र
अंधकार	तिमिर, अँधेरा, तम
शरीर	देह, तनु, काया, कलेवर, अंग, गात
आग	अग्नि, अनल, पावक, दहन, ज्वलन, धूमकेतु, कृशानु

इंद्र	देवराज, सुरेन्द्र, सुरपति, अमरेश, देवेन्द्र, वासव, सुरराज, सुरेश
कृषक	हलवाहा, किसान, कृषिजीवी, खेतिहर
गंगा	देवनदी, मंदाकनी, भगीरथी, विश्नुपगा, देवपगा, ध्रुवनंदा
दरिद्र	निर्धन, गरीब, रंक, कंगाल, दीन
ईश्वर	परमपिता, परमात्मा, जगदीश, भगवान, परमेश्वर, जगदीश्वर, विधाता
ऐश्वर्य	समृद्धि, विभूति
ऋषि	मुनि, साधु, यति, संन्यासी, तत्वज्ञ, तपस्वी
किनारा	तीर, कूल, कगार, तट
कान	कर्ण, श्रुति, श्रुतिपटल, श्रवण, श्रोत, श्रुतिपुट
कोयल	कोकिला, पिक, काकपाली, बसंतदूत, सारिका, कुहुकिनी, वनप्रिया
क्रोध	रोष, कोप, अमर्ष, गुस्सा, आक्रोश, कोह, प्रतिघात
चंद्रमा	चाँद, हिमांशु, इंदु, सुधांशु, विधु, तारापति, चन्द्र, शशि, कलाधर, निशाकर
जंगल	विपिन, कानन, वन, अरण्य, गहन, कांतार, बीहड़, विटप
तालाब	सरोवर, जलाशय, सर, पुष्कर, ह्रद, पद्माकर, पोखरा, जलवान, सरसी
नदी	तनूजा, सरित, शौवालिनी, स्रोतस्विनी, आपगा, कूलंकषा, तटिनी, सरि
नेत्र	चक्षु, लोचन, नयन, अक्षि, चख, आँख

परिवार	कुटुंब, कुनबा, खानदान, घराना
पवन	वायु, हवा, समीर, वात, मारुत, अनिल, पवमान, समीरण, स्पर्शन
बादल	मेघ, घन, जलधर, जलद, वारिद, नीरद, सारंग, पयोद, पयोधर
बालू	रेत, बालुका, सैकत
बगीचा	बाग़, वाटिका, उपवन, उद्यान, फुलवारी, बगिया
मोर	केक, कलापी, नीलकंठ, शिखावल, सारंग, ध्वजी, शिखी, मयूर, नर्तकप्रिय
मनुष्य	आदमी, नर, मानव, मानुष, जन, मनुज
मृग	हिरण, सारंग, कृष्णसार
मैना	सारी, सारिका, त्रिलोचना, मधुरालाषा, कलहप्रिया
रवि	सूरज, दिनकर, प्रभाकर, दिवाकर, सविता, भानु, दिनेश, अंशुमाली, सूर्य
वृक्ष	तरू, अगम, पेड़, पादप, विटप, गाछ, दरख्त, शाखी, विटप, द्रुम
विष	ज़हर, हलाहल, गरल, कालकूट
वर्षा	पावस, बरसात, वर्षाकाल, चौमासा, वर्षाऋतु
सोना	स्वर्ण, कंचन, कनक, सुवर्ण, हाटक, हिरण्य, जातरूप, हेम, कुंदन
स्वर्ग	सुरलोक, देवलोक, दिव्यधाम, ब्रह्मधाम, परमधाम, त्रिदिव, दयुलोक
हिरण	सुरभी, कुरग, मृग, सारंग, हिरन

हंस	कलकंठ, मराल, सिपपक्ष, मानसौक
अमृत	सुरभोग, सुधा, सोम, पीयूष, अमिय, जीवनोदक
अग्नि	आग, ज्वाला, दहन, धूमकेतु, अनल, पावक, वहनि, वहिन
अनुपम	अपूर्व, अतुल, अनोखा, अनूठा, अद्वितीय, अदभुत, अनन्य
असुर	यातुधान, निशिचर, रजनीचर, दनुज, दैत्य, तमचर, राक्षस, निशाचर
अश्व	हय, तुरंग, घोड़ा, घोटक, हरि, तुरग, वाजि, सैन्धव
आनंद	हर्ष, सुख, आमोद, मोद, प्रसन्नता, आह्लाद, प्रमोद, उल्लास
आश्रम	कुटी, स्तर, विहार, मठ, संघ, अखाड़ा
आम	रसाल, आम्र, अतिसौरभ, मादक, अमृतफल
आँसू	नेत्रजल, नयनजल, चक्षुजल, अश्रु
आत्मा	जीव, देव, चैतन्य, चेतनतत्तव, अंतःकरण
अंग	अंश, अवयव, हिस्सा, भाग

तुकांत शब्द

वे शब्द जिनके अंत में समान तुक वाले शब्द हो अर्थात् एक समान लय वाले शब्द हो । जिन शब्दों का अंत वाला अक्षर समान होता है उन्हें तुकांत शब्द कहते है। जैसे- सोता, रोता, पोता इसमें 'ता' शब्द तुकांत शब्द है। इन शब्दों से कविता का आनंद बढ़ जाता है और कविता में रूकावट नहीं आती है और इसमें प्रवाह बना रहता है।

अन्य उदहारण

- पानी, रानी, नानी
- खाता, सोता. रोता
- दाना, खाना, जाना
- रोक, टोक, शोक
- आम, नाम, शाम

अतुकांत शब्द

ये शब्द बिना तक के होते है। इन शब्दों से बनी कविता में ध्वनियाँ परवर्तित होती रहती है। कविता लयबद्ध नहीं होती है।

जैसे- पानी, दिन, कुआं, जल,

जागते, सवेरा, रात, आसमान

संज्ञा

किसी प्राणी, वस्तु या स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा के प्रमुखतः तीन भेद हैं

- व्यक्तिवाचक
- जातिवाचक
- भाववाचक

व्यक्तिवाचक संज्ञा

जो नाम किसी विशेष (एक) व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध कराते हैं उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे -

- व्यक्तियों के नाम
- दिशाओं के नाम
- समुद्रों के नाम
- दिनों के नाम

- महीनों के नाम
- त्योहारों के नाम
- नगरों, चौकों, सड़कों के नाम
- देशों के नाम
- नदियों के नाम

जातिवाचक संज्ञा

जो नाम किसी एक विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु का न होकर पूरी जाति या समूह का बोध कराए उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे -

- व्यक्ति - - महिला, पुरुष, बच्चा, युवक, किशोर।
- वस्तु - - मेज, कुर्सी, पुस्तक, बर्तन, गहने।
- स्थान - मैदान, छत, रेगिस्तान, जंगल, शहर, गांव।
- पशु-पक्षी - कौआ, घोड़ा, गाय, तोता, मोर।

भाववाचक संज्ञा

जो शब्द किसी भाव, गुण, दशा, अवस्था आदि के नामों का बोध कराए, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे प्रेम, क्रोध, दया, मिठास।

सर्वनाम

"जो शब्द संज्ञा के बदले वाक्य में प्रयुक्त किए जाते है, सर्वनाम कहलाते है।" सर्वनाम का सभी नामो के लिए प्रयोग किए जा सकते है। इसलिए इसे संज्ञा का प्रतिनिधि भी कहते है जैसे- मैं, हम, तुम, आप, यह, वह, कोई, कुछ, कौन, क्या, जो, आदि।

वाक्य प्रयोग द्वारा संज्ञा का उदाहरण

- वह अब कल आएगा।
- तुम कल सवेरा ही चले जाना।

सर्वनाम छह प्रकार के होते हैं-

- पुरुषवाचक सर्वनाम
- निजवाचक सर्वनाम
- निश्चयवाचक सर्वनाम
- अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- प्रश्नवाचक सर्वनाम
- संबंधवाचक सर्वनाम

पुरुषवाचक सर्वनाम

पुरुषवाचक सर्वनाम स्त्री या पुरुष के नाम के बदले आते हैं। इसमें बोलने वाले, सुनने वाले और जिसके विषय में बात होती है, उनके लिए प्रयोग में लाए जाने वाले सर्वनाम पुरूषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे- मैं, हम, तुम, आप, वह, वे आदि ।

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन प्रकार है-

- उत्तम पुरुष
- मध्यम पुरुष
- अन्य पुरुष

उत्तम पुरुष :- जिन सर्वनामों का प्रयोग बोलने या लिखने वाला व्यक्ति अपने लिए करता है, उन्हें उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम कहते हैं ।

जैसे- मैं, हम, मेरा, मैने, हमने, हमारा, हमसे आदि ।

उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम के उदाहरण

- मैं वहाँ जाऊँगा ।
- मैंने उसका गाना सुना ।
- हमने पत्र लिखा ।
- हम चलेंगे।

मध्यम पुरुष :- जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग सुनने वाले के लिए किया जाता है, उन्हें मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम कहते है ।

जैसे- तू, तुम, आप, तुमने, तुम्हारा, आपने आपके

मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम के उदाहरण

- तुम एक अच्छे इंसान हो ।
- तुम्हारे दादा जी बीमार है ।
- तुमने खाना अच्छे से खाया ।

अन्य पुरुष :- जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वक्ता या श्रोता किसी अन्य व्यक्ति के लिए करता है तो उसे अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- वह, वे, यह, उस, उन, इस, इन ।

अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम के उदाहरण

- वह पूरी रात रोती रही ।
- वे कल सुबह जल्दी जाएगे ।
- उन्हें बहुत बुरा लगा होगा ।

निजवाचक सर्वनाम

जो सर्वनाम कर्ता के साथ अपना-पन दर्शाने के लिए किए जाते हैं, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- स्वयं, खुद अपने आप इत्यादि ।

निजवाचक सर्वनाम के उदाहरण

- वे खुद ही अपना काम करते है ।
- उसने अपने आप दुःख दिया ।
- वे कल सुबह अपने आप लौट आएंगे।

निश्चयवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु अथवा व्यक्ति का बोध हो तो उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- यह, वह, वे आदि।

निश्चयवाचक सर्वनाम के उदाहरण

- वह मेरा दोस्त है।
- यह किसान है ।
- यह मेरी कार है।
- वे समोसे मत खाओ ।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम

जिस सर्वनाम शब्द से किसी निश्चित व्यक्ति वस्तु या घटना का बोध न हो, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते है ।

जैसे- कोई कुछ, किसी आदि ।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम के उदाहरण

- दरवाजे पर कोई खड़ा है।
- किसी ने उसके थप्पड़ मारा ।
- उधर से कोई गुजरा है ।
- उस घर में कोई है ।

प्रश्नवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी प्राणी, व्यक्ति, वस्तु आदि के विषय में प्रश्न किया जाता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

प्रश्नवाचक सर्वनाम के उदाहरण

- तुम्हारा क्या नाम है ?
- उसे कौन बुला रहा है ?

- फोन पर कौन बोल रहा है ?
- तुम क्या खा रहे हो ?

सम्बन्धवाचक सर्वनाम

दो शब्दों में परस्पर सम्बन्ध का बोध कराने वाले शब्द, सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाते है।

जैसे- जैसा, वैसा, जिसने, उसने, जो, सो आदि ।

सम्बन्धवाचक सर्वनाम के उदाहरण

- जैसा बोओगे, वैसा काटोगे।
- जो मेहनत करता है, वह सफल होता है।
- जैसी करनी, वैसी भरनी ।

क्रिया

जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उन्हें क्रिया कहते हैं ।

जैसे -

- माताजी खाना बना रही है
- बच्चे खेल रहे हैं।
- हवा चल रही है।
- सभी बच्चे पढ़ रहे है

धातु - क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है। धातु के साथ "ना" प्रत्यय जोड़कर क्रिया का सामान्य रूप बनता है।

जैसे-

- लिख + ना = लिखना
- चल = चल + ना = चलना
- पढ़ = पढ़+ ना = पढ़ना

क्रिया के भेद

कर्म के आधार पर क्रिया के भेद

- सकर्मक क्रिया
- अकर्मक क्रिया

सकर्मक क्रिया

जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे -

- माँ खाना बनाती है ।
- विकास क्रिकेट खेलता है।

सकर्मक क्रिया की पहचान

- क्रिया के साथ क्या, किसे, किसको शब्द लगाकर प्रश्न करने पर यदि उत्तर प्राप्त हो जाए तो उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे- पुलिस ने चोर को पीटा।

प्रश्न - किसे / किसको को पीटा

उत्तर - चोर (कर्म)

सोनम पुस्तक पढ़ रही है।

प्रश्न- क्या, रही है?

उत्तर - पुस्तक (कर्म)

सकर्मक क्रिया के भेद

- एककर्मक क्रिया
- द्विकर्मक क्रिया

1. एककर्मक क्रिया - जिस क्रिया का एक कर्म हो, उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे - सोनू ने साइकिल चलाई।

प्रश्न - क्या चलाई ?

उत्तर- साइकिल (एककर्म)

2. द्विकर्मक क्रिया - जिस क्रिया में दो कर्म हो उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे - नैना ने शोएब को पुस्तक दी।

प्रश्न- क्या दी?

उत्तर - पुस्तक (मुख्यकर्म)

प्रश्न – किसको दी?

उत्तर - शोएब को दी (गौणकर्म)

अकर्मक क्रिया

जिस क्रिया के साथ कर्म नहीं होता है तथा क्रिया का प्रभाव सिर्फ़ कर्ता पर पड़ता है उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

- जैसे हीना हंस रही है।
- बच्चा सो रहा है।

अकर्मक क्रिया की पहचान

- क्रिया से पहले 'क्या', किसे, किसको शब्द लगाकर प्रश्न करने पर यदि उत्तर नहीं मिलता तो क्रिया अकर्मक होती है।
- प्रश्न करने पर यदि उत्तर में "कर्ता" की प्राप्ति होती है तो भी क्रिया अकर्मक होती है।

जैसे- बच्चा सो गया।

प्रश्न- "क्या" सो गया।

उत्तर - बच्चा (कर्ता)

रचना के आधार पर

संरचना की दृष्टि से क्रिया के निम्नलिखित पांच भेद हैं।

- सामान्य क्रिया
- संयुक्त क्रिया
- नामधातु क्रिया
- प्रेरणार्थक क्रिया
- पूर्वकालिक क्रिया

सामान्य क्रिया

जिस वाक्य में एक क्रिया होती है उसे सामान्य क्रिया कहते हैं।

जैसे-

- नेहा ने खाना बनाया।
- रोहन सो गया।

संयुक्त क्रिया

जब दो या दो से अधिक क्रियाएँ मिलकर किसी पूर्ण क्रिया को बनाती हैं, तब वे संयुक्त क्रियाएँ कहलाती हैं।

जैसे -

- माँ ने खाना बांट दिया।
- वह घर पहुँच गया।

नामधातु क्रिया - संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों से बनने वाली क्रियाओं को नामधातु क्रिया कहते हैं।

संज्ञा शब्दों से बनी क्रियाएं-

- शर्म = शर्माना
- बात = बतियाना

- झूठ = झुठलाना
- हाथ = हथियाना

सर्वनाम शब्दों से बनी क्रियाएं-

- रंग = रंगना
- अपना = अपनाना

विशेषण शब्दों से बनी क्रियाएं-

- नरम = नरमाना
- गरम = गरमाना
- तोतला = तुतलाना

प्रेरणार्थक क्रिया

जहाँ कर्ता कार्य को स्वयं न करके, किसी दूसरे से करवाता है, वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है। जैसे - मालकिन नौकरानी से बर्तन साफ करवाती है।

पूर्वकालिक क्रिया

किसी भी वाक्य में मुख्य क्रिया से पहले वाली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है।

जैसे-

- राहुल खाना खाकर सो गया
- बचे पढ़कर खेलने लगे।

विशेषण

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं। जैसे- बड़ा, काला, लम्बा, दयालु, एक, दो, अच्छा, बुरा, मीठा, खट्टा, भारी, सुंदर आदि। जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताई जाती है उसे विशेष्य कहते है।

विशेषण के कुछ उदहारण

- गुलाब का फूल बहुत सुंदर है ।
- मेरे पास एक कार है।
- मेरे दोस्त का घर बहुत बड़ा है।

विशेषण के प्रकार

- गुणवाचक विशेषण
- परिमाणवाचक विशेषण
- संख्यावाचक विशेषण
- सार्वनामिक विशेषण
- व्यक्तिवाचक विशेषण

गुणवाचक विशेषण -

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के गुण, दोष, रंग रूप, आकार, स्थान, समय, दशा, अवस्था का बोध हो वह गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं ।

जैसे- अच्छा, बुरा, कायर, द्धिमान, लाल, हरा, नीला, लंबा, मीठा, खट्टा, आदि ।

परिमाणवाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा अथवा नाप तौल का बोध हो वह परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

जैसे- 5 किलोग्राम चावल, 1 लीटर पेट्रोल, थोड़ा पानी, बहुत दूध आदि ।

संख्यावाचक विशेषण

जिससे संख्या का बोध होता है उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे - एक किताब, दो मनुष्य, तीन लड़के, कुछ फल, थोड़ा दूध आदि।

सार्वनामिक विशेषण

ऐसे सर्वनाम शब्द जो संज्ञा से पहले लगकर उस संज्ञा शब्द की विशेषण की तरह विशेषता बताते हैं, वे शब्द सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

यह शब्द संज्ञा के लिए विशेषण का काम करते हैं।

जैसे - मेरी पुस्तक, कोई बालक आदि ।

व्यक्तिवाचक विशेषण

व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों से बने विशेषण को व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे- मुझे भारतीय खाना बहुत पसंद है। अक्षय जोधपुरी जूती पहनता हैं

वचन

वचन के प्रकार

- एकवचन
- बहुवचन

एकवचन :- संज्ञा के जिस रूप से एक व्यक्ति या एक वस्तु होने का ज्ञान हो, उसे एकवचन कहते है।

जैसे- स्त्री, घोड़ा, नदी, रुपया, लड़का, गाय, सिपाही, बच्चा, कपड़ा, माता, माला, पुस्तक, टोपी, बंदर. मोर आदि ।

बहुवचन :- शब्द के जिस रूप से एक से अधिक व्यक्ति या वस्तु होने का ज्ञान हो, उसे बहुवचन कहते है।

जैसे- स्त्रियाँ, घोड़े, नदियाँ, रूपये, लड़के, गायें, कपड़े, टोपियाँ, मालाएँ, माताएँ, पुस्तकें, वधुएँ, गुरुजन, रोटियाँ, लताएँ, बेटे आदि ।

एकवचन और बहुवचन के कुछ महत्वपूर्ण नियम

- आदरणीय व्यक्तियों के लिए सदैव बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। जैसे- पापाजी कल मुंबई जायेंगे।
- संबद्ध दर्शाने वाली कुछ संज्ञायें एकवचन और बहुवचन में एक समान रहती है। जैसे- ताई, मामा, दादा, नाना, चाचा आदि ।
- द्रव्यसूचक संज्ञायें एकवचन में प्रयोग होती है। जैसे- पानी, तेल, घी, दूध आदि ।
- कुछ शब्द सदैव बहुवचन में प्रयोग किये जाते है जैसे- दाम, दर्शन, प्राण, आँसू आदि । पुल्लिंग ईकारान्त, उकारान्त और ऊकारान्त शब्द दोनों वचनों में समान रहते है। जैसे - एक मुनि - दस मुनि, एक डाकू - दस डाकू, एक आदमी - दस आदमी आदि । बड़प्पन दिखाने के लिए कभी -कभी वक्ता अपने लिए 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग करता है जैसे- 'हमें' याद नहीं कि हमने कभी 'आपसे' ऐसा कहा हो।
- व्यवहार में 'तुम' के स्थान पर 'आप' का प्रयोग करते हैं। जैसे-'आप' कल कहाँ गये थे ?
- जातिवाचक संज्ञायें दोनों ही वचनों में प्रयुक्त होती है। जैसे- (i) 'कुत्ता' भौंक रहा है। (ii) 'कुत्ते भौंक रहे है।
- धातुओं का बोध कराने वाली जातिवाचक संज्ञायें एकवचन में ही प्रयुक्त होती है। जैसे- 'सोना' महँगा है, 'चाँदी' सस्ती है।

हमेशा एकवचन रहने वाले शब्द

जैसे- वर्षा, पानी, दूध, आसमान, प्रजा जनता, आदि।

हमेशा बहुवचन रहने वाले शब्द

जैसे – बोल, हस्ताक्षर, बाल, आँसू, रोम, दर्शन, प्राण, समाचार, दर्शक, दाम या मूल्य, भाग्य, लोग आदि।

काल

काल से क्रिया के संपन्न होने, उसके घटने, उसकी पूर्ण - अपूर्ण अवस्था एवं स्थिति का पता चलता है। कार्य के करने या होने का समय बताने वाली क्रिया ही काल कहलाती है।

जैसे -

- बच्चे खेल रहे हैं। (वर्तमान काल)
- बच्चे खेल रहे थे। (भूतकाल)
- बच्चे खेलेंगे। (भविष्यत् काल)

काल के प्रकार

- वर्तमान काल
- भूतकाल काल
- भविष्यकाल काल

वर्तमान काल

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि क्रिया का होना या करना चल रहे समय में हो रहा है, उसे वर्तमान काल कहते हैं।

उदाहरण:-

- सोनू खाना खा रहा है ।
- बच्चे सो रहे है ।

वर्तमान काल के प्रकार

- सामान्य वर्तमान काल
- अपूर्ण वर्तमान काल
- पूर्ण वर्तमान काल
- संदिग्ध वर्तमान काल

सामान्य वर्तमान काल -: क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान काल में सामान्य रूप से होने का बोध हो, उसे सामान्य काल कहते हैं;

उदाहरण

- बच्चे विद्यालय पढ़ने जाते हैं।

- कोहली क्रिकेट का अच्छा खिलाड़ी है।

इन वाक्यों में क्रियाएँ सामान्य रूप से वर्तमान काल में हो रही है । अत: ये सामान्य वर्तमान काल की क्रियाएँ हैं।

अपूर्ण वर्तमान काल : जब कार्य वर्तमान काल में आरंभ होकर पूर्ण न हुआ हो, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं।

उदाहरण

- माता जी खाना बना रही है।
- बच्चे पानी मे खेल रहे है।
- इन वाक्यों में कार्य पूरा नहीं हुआ है वो अभी जारी है, तो ये अपूर्ण वर्तमान काल की क्रियाएँ हैं।

पूर्ण वर्तमान काल -: जब कार्य वर्तमान समय में ही पूर्ण हो जाए, उसे पूर्ण वर्तमान काल कहते हैं।

उदाहरण: -

- माता जी ने खाना बना दिया है।
- बच्चे पानी से बहार आ गए है ।

इन वाक्यों में कार्य वर्तमान समय में पूरा हो गया है, ये पूर्ण वर्तमान काल की क्रियाएं हैं।

संदिग्ध वर्तमान काल -: जिस क्रिया के वर्तमान काल में होने के बारे में संदेह या अनिश्चतता हो, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं।

उदाहरण-

- माता जी अभी खाना बना रही होगी ।
- बच्चे पानी में खेल रहे होंगे ।

इन वाक्यों में क्रियाओं के होने में संदेह की स्थिति हैं, अत: ये संदिग्ध वर्तमान काल की क्रियाएँ हैं।

भूतकाल

बीते हुए समय में कार्य होने का बोध कराने वाली क्रिया का रूप भूतकाल कहलाता है।

उदाहरण:

- मेरा दोस्त मुंबई चला गया।
- पिताजी ने घर बनाया था।

इन वाक्यों में क्रिया के बीते हुए समय का बोध हो रहा है। अत: ये भूतकाल के उदाहरण हैं।

भूतकाल के प्रकार

- सामान्य भूतकाल
- आसन्न भूतकाल
- पूर्ण भूतकाल
- अपूर्ण भूतकाल
- संदिग्ध भूतकाल
- हेतु-हेतुमद भूतकाल

सामान्य भूतकाल :- क्रिया के जिस रूप से काम के सामान्य रूप से बीते समय में पूरा होने का बोध हो, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं।

उदाहरण

- पिताजी ने हमें झूला झुलाया।
- अध्यापक ने पाठ पढ़ाया।

इन वाक्यों में क्रियाएँ बीते हुए समय में पूरी हो चुकी है। अत: ये सामान्य भूतकाल की क्रियाएँ हैं।

आसन्न भूतकाल -: क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि काम निकट भूत में अर्थात् अभी-अभी पूरा हुआ है, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं।

उदाहरण

- उसने अपने पापा को पत्र लिखा है।
- मम्मी बाजार से आ गई है ।

इन वाक्यों में क्रियाएँ अभी-अभी पूर्ण हुई हैं। अत : ये आसन्न भूतकाल की क्रियाएँ हैं।

पूर्ण भूतकाल -: क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि काम को हुए बहुत समय बीत चुका है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं।

उदाहरण: -

- मेरे दोस्त ने एक अच्छा गाना सुनाया था ।
- हम ताज महल देखने गए थे ।

इन वाक्यों में क्रियाएँ भूतकाल में पूर्ण हो चुकी थी अत: ये पूर्ण भूतकाल की क्रियाएँ हैं।

अपूर्ण भूतकाल -: क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया भूतकाल में हो रही थी, लेकिन उसकी समाप्ति का पता न चल पाए, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं।

उदाहरण

- मम्मी खाना बना रही थी ।
- बच्चे पानी में तैर रहे थे।

इन वाक्यों में क्रिया के अतीत में शुरू होकर अभी तक पूर्ण न होने का बोध हो रहा है। अत: ये अपूर्ण भूतकाल की क्रियाएं हैं।

संदिग्ध भूतकाल -: भूतकाल की जिस क्रिया के करने या होने में संदेह हो, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते है ।

उदाहरण-

- सुनैना अपना काम पूरा कर चुकी होगी ।
- मेहमान घर पर पहुँच चुके होंगे ।

इन वाक्यों में क्रियाओं के भूतकाल में होने में संदेह है, अत: ये संदिग्ध भूतकाल की क्रियाएँ हैं ।

हेतु हेतुमद भूतकाल : भूतकाल में एक क्रिया के होने या न होने पर दूसरी क्रिया का होना या न होना निर्भर होता है, तो उसे हेतु हेतुमद भूतकाल कहते हैं।

उदाहरण

- यदि तुम पढ़ते तो अवश्य सफलता प्राप्त करते ।
- यदि तुम जल्दी स्टेशन पर जाते तो गाडी जरूर मिलती ।

इन वाक्यों में क्रियाएँ एक दूसरे पर निर्भर हैं, पहली क्रिया के होने पर ही दूसरी क्रिया होगी । अत: ये हेतुहेतुमद भूतकाल की क्रियाएँ हैं।

भविष्यत् काल

क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि क्रिया आने वाले समय में सम्पन्न होगी, उसे भविष्यत् काल कहते हैं।

उदाहरण

- हम कल घूमने जाएँगे।
- कल हमारे घर मेहमान आएंगे ।

इन वाक्यों में क्रिया के आने वाले समय में पूर्ण होने की बात कही गई है, अत: ये भविष्यत् काल की क्रियाएं है।

भविष्यत काल के प्रकार

- सामान्य भविष्यत काल
- संभाव्य भविष्यत काल
- हेतु-हेतुमद भविष्यत काल

सामान्य भविष्यत् काल : क्रिया के जिस रूप से कार्य का आने वाले समय में सामान्य रूप से होने या करने का बोध हो, उसे सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं।

उदाहरण

- कल सुबह बच्चे स्कूल जाएंगे ।
- हम फ़िल्म देखने जाएंगे।

इन वाक्यों में क्रियाएं भविष्यत् में सामान्य रूप से संपन्न होगी । अत : ये सामान्य भविष्यत् काल की क्रियाएँ हैं।

संभाव्य भविष्यत् काल -: क्रिया के जिस रूप से कार्य के भविष्य में होने की संभावना हो परंतु निश्चित न हो, उसे संभाव्य भविष्यत् काल कहते हैं।

उदाहरण

- शायद कल वर्षा हो ।
- शायद परसो स्कूल बंद हो ।

इन वाक्यों में क्रियाओं के भविष्य में संपन्न होने की संभावना जताई जा रही है। ये संपन्न होगी ऐसा निश्चित नहीं है । अत: ये संभाव्य भविष्यत् काल की क्रियाएँ हैं।

हेतु हेतुमद भविष्यत् काल : इस काल के वाक्य में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर होता है; अर्थात क्रिया किसी अन्य क्रिया के होने पर ही संपन्न होगी इसे हेतु - हेतुमद भविष्यत् काल कहते हैं।

उदाहरण

- यदि तुम परिश्रम करोगे तो अवश्य सफल होगे ।
- यदि भूकंप न होता तो सब कुछ ठीक रहता ।

इन वाक्यों में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर है, अत: ये हेतु - हेतुमद भविष्यत् काल की क्रियाएँ हैं।

लिंग

संज्ञा के जिस रूप से किसी वस्तु के पुरुषत्व या स्त्रीत्व का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं। जैसे पति पत्नी रात' दिन' घोडा घोड़ी' आदि

लिंग के प्रकार

- पुल्लिंग
- स्त्रीलिंग

पुल्लिंग

जिन शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है उन्हें पुल्लिंग शब्द कहते हैं जैसे: पिता, भाई, लड़का, पेड़, सिंह, शिव, हनुमान, बैल आदि ।

स्त्रीलिंग

जिन शब्दों से स्त्री जाति का बोध होता है उन्हें स्त्रीलिंग शब्द कहते हैं । जैसे: माता, बहन, यमुना, गंगा, कुरसी, छड़ी, नारी बुआ, लड़की, लक्ष्मी, गाय

पुल्लिंग की पहचान के नियम

- शरीर के अंगों के कुछ नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसे- हाथ, पैर, कान, दाँत, सिर, आदि । लेकिन कुछ अपवाद है जैसे- जीभ, आँख, नाक, उँगलियाँ ये स्त्रीलिंग शब्द कहे जाते हैं।
- जल और थल भागों के नाम पुल्लिंग होते है। जैसे- घर, देश, सरोवर, सागर, नगर, ग्राम आदि ।
- वारों, महीनों, पहाड़ों, समुद्रों एवं ग्रहों के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसे-रविवार, आषाढ़, हिमालय, अरब सांगर, मंगल ग्रह आदि ।
- पेड़ों के नाम पुल्लिंग होते हैं। जैसे- नीम, बबूल, सेब, बांस, बरगद, आम, मेहंदी, सागवान, ताड़, देवदार, अशोक, सागौन आदि ।
- समूहों के नाम -झुंड, दल, परिवार, मंडल, समुदाय, संघ तथा वर्ग आदि ।
- वाहनों के नाम - ताँगा, बस, जहाज, स्कूटर, ट्रक, इंजन तथा रॉकेट आदि। इसके कुछ अपवाद है जैसे - गाड़ी, मोटर ।
- सब्ज़ियों के नाम- आलू, टिंडा, कटहल, खीरा, बैंगन, टमाटर, प्याज़, अदरक, पेठा, नींबू आदि। इसके कुछ अपवाद है जैसे -- तोरी, फली, मूली, गाजर।

- ग्रह-नक्षत्रों के नाम - सूर्य, चंद्रमा, बुध, शुक्र, बृहस्पति, शनि आदि। इसमें अपवाद है - पृथ्वी ।
- अनाजों और धातुओं के नाम पुल्लिग होते हैं। जैसे- गेहूं, चावल, मक्का, बाजरा, साबूदाना, चना, मटर, लोहा, ताँबा, सोना, आदि ।
- द्रव पदार्थों के नाम पुल्लिग होते हैं। जैसे- घी, तेल, दूध, दही, पानी आदि।
- रत्नों के नाम पुल्लिग होते हैं। जैसे- हीरा, पन्ना, नीलम, पुखराज, मोती आदि ।

स्त्रीलिंग की पहचान के नियम

- नदियों, तिथियों तथा भाषाओं के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे- गंगा, यमुना, सप्तमी, अष्टमी, हिंदी आदि ।
- शरीर के कुछ अंग - अँगुली, आँख, गर्दन, छाती, जीभ, जाँघ, कलाई, हथेली आदि ।
- तिथियों के नाम – एकादशी, पंचमी, द्वादशी, पूर्णिमा, अमावस्या आदि।
- संस्कृत के कुछ पुल्लिग शब्द हिन्दी में स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे- वायु, सन्तान, आत्मा, वस्तु, मृत्यु, अग्नि, महिमा, पुस्तक आदि ।
- जिन शब्दों में 'आई', 'वट' और 'हट' प्रत्यय लगा होता है वे प्राय: स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे- सिलाई, खटाई, चारपाई, घबराहट, बनावट, सजावट, आदि।

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम

1. आ प्रत्यय जोड़कर

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
अध्यक्ष	अध्यक्षा
अपराजित	अपराजिता
प्रिय	प्रिया

अनुज	अनुजा
मूर्ख	मूर्खा

2. ई प्रत्यय जोड़कर

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
हिरन	हिरनी
बेटा	बेटी
देव	देवी

3. नी प्रत्यय जोड़कर

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
पति	पत्नी
सिंह	सिंहनी
सरदार	सरदारनी
चोर	चोरनी

4. इन प्रत्यय जोड़कर

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
नाग	नागिन
बाघ	बाघिन
नाती	नातिन
भिखारी	भिखारिन
लुहार	लुहारिन

5. या प्रत्यय जोड़कर

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बंदर	बंदरिया
डिब्बा	डिबिया
गुड्डा	गुड़िया
लोटा	लुटिया
कुत्ता	कुतिया

चिडा	चिड़िया

6. इका प्रत्यय जोड़कर

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
शिक्षक	शिक्षिका
अध्यापक	अध्यापिका
गायक	गायिका
सेवक	सेविका

उपसर्ग

उपसर्ग वे शब्दांश होते हैं, जो किसी शब्द से पहले जुड़कर उसके अर्थ में बदलाव ला देते हैं।

जैसे अभी + मान = अभिमान, यहां 'अभि' उपसर्ग है।

इसके कुछ उदहारण है -

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अति	अधिक	अत्यधिक, अत्यंत, अतिरिक्त, अतिशय
अधि	ऊपर, श्रेष्ठ	अधिकार, अधिपति, अधिनायक

उप	निकट, गौण	उपदेश, उपवन, उपमंत्री, उपहार
परा	उल्टा, पीछे	पराजय, पराभव, परामर्श
प्र	अधिक, आगे	प्रख्यात, प्रबल, प्रस्थान, प्रकृति
प्रति	उल्टा, हर एक	प्रतिकूल, प्रत्यक्ष, प्रतिक्षण, प्रत्येक
सु	अच्छा, अधिक	सुजन, सुगम, सुशिक्षित
अ	अभाव, निषेध	अछूता, अथाह, अटल
नि	बिना	निगोड़ा, निडर, निहत्था, निकम्मा
भर	पूरा	भरपेट, भरपूर, भरसक, भरमार
उन	एक कम	उनतीस, उनसठ, उनहत्तर, उंतालीस
सब	अधीन, नीचे	सब-जज, सब-कमेटी, सब-इंस्पेक्टर
डिप्टी	सहायक	डिप्टी कलेक्टर, डिप्टी-मिनिस्टर
जनरल	प्रधान	जनरल मैनेजर, जनरल सेक्रेटरी
पुनर्	फिर	पुनर्जन्म, पुनर्लेखन, पुनर्जीवन
बहिर	बाहर	बहिर्गमन, बहिष्कार
सत्	सच्चा	सज्जन, सत्कर्म, सदाचार, सत्कार्य

प्रत्यय

प्रत्यय ऐसे शब्दांश होते है जो किसी भी सार्थक मूल शब्द के अंत में जुड़कर उसका अर्थ या भाव बदल देते है।

जैसे सफल + ता = सफलता, अच्छा + ई = अच्छाई

यहाँ 'ता' और 'आई' दोनों शब्दांश प्रत्यय हैं, जो 'सफल' और 'अच्छा' मूल शब्द के बाद में जोड़ दिए जाने पर 'सफलता' और 'अच्छाई' शब्द की रचना करते हैं

अन्य महत्वपूर्ण प्रत्यय

शब्द + प्रत्यय = शब्द

- समाज + इक = सामाजिक
- सुगंध + इत = सुगंधित
- भूलना + अक्कड = भुलक्कड
- मीठा + आस = मिठास
- लोहा + आर = लुहार
- नाटक + कार = नाटककार
- बड़ा + आई = बड़ाई
- टिक + आऊ = टिकाऊ
- बिक + आऊ = बिकाऊ
- होन + हार = होनहार
- लेन + दार = लेनदार
- घट + इया = घटिया
- गाडी + वाला = गाड़ीवाला
- दया + लु = दयालु

वे शब्द जिनमे उपसर्ग और प्रत्यय दोनों है।

शब्द = उपसर्ग + शब्द + प्रत्यय

- अध्यात्मिक = अधि + आत्म + इक
- निर्दयता = निर् + दया + ता
- अपमानित = अप + मान + इत
- दुस्साहसी = दुस + साहस + ई
- निर्दयी = निर + दया + ई
- परिपूर्णता = परि + पूर्ण + ता
- स्वतंत्रता = स्व + तंत्र + ता
- संपूर्णता = सम् + पूर्ण + ता
- परिश्रमी = परि + श्रम + ई
- अपराधी = अप + राध + ई
- सम्मानित = सम् + वाद + ई
- अभिमानी = अभि + मान + ई
- अतिवादी = अति + वाद + ई
- असुरक्षित = अ + सुरक्षा = इत
- संरक्षित = सम् + रक्ष + इत
- अत्याचारी = अति + आचार + ई
- अपशुकनी = अप + शकुन + ई
- निर्बलता = निर + बल + ता
- निर्भयता = निर + भय + ता
- आलौकिक = अ + लोक + इक
- अनैतिक = अ + नीति + इक
- परिपूर्णता = परि + पूर्ण + ता
- कुकर्मी = कु + कर्म + ई
- अधार्मिक = अ + धर्म + इक
- अनुदारता = अन + उदार + ता

देशज - विदेशज शब्द

देशज शब्द

वे शब्द जो स्थानीय भाषा के शब्द होते है, ये देश की विभिन्न बोलियों से लिए जाते है। ये वे शब्द होते है जिनकी उत्पत्ति के मूल का पता न हो परन्तु वे प्रचलन में हों। ऐसे शब्द देशज शब्द कहलाते हैं।

देशज शब्द दो प्रकार के होते है .

- अनुकरण वाचक देशज शब्द
- अनुकरण रहित देशज शब्द

अनुकरण वाचक देशज शब्द :- जब किसी वास्तु की वास्तविक ध्वनि को ध्यान में रखकर शब्दों का निर्माण किया जाता है, तो वे अनुकरण वाचक देशज शब्द कहलाते हैं।

जैस - गड़गड़ाना, टिमटिमाना, पटपटाना, खटखटाना, हिनहिनाना, धमधमाना, तथा पशु पक्षियों की आवाजें इसमें आती हैं।

अनुकरण रहित देशज शब्द :- वे शब्द जिनके निर्माण की प्रक्रिया का पता नहीं होता है, उन्हें अनुकरण रहित देशज शब्द कहते हैं।

जैसे - जूता, कटोरा, लोटा, खिड़की, हाथ, चना, बाजरा, घेवर, झण्डा, मुक्का, लकड़ी, डिबिया, खिचड़ी, चिड़िया, आदि ।

विदेशी / विदेशज शब्द

विदेशी भाषाओं से हिंदी में आये शब्दों को विदेशी शब्द कहा जाता है। इन विदेशी भाषाओं में मुख्यत: अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी व पुर्तगाली शामिल है।

अरबी शब्द

अजीब, अमीर, अक्ल, कदम, कमल, कर्ज, किस्मत, किला, कसम, कीमत, कसरत, कुर्सी, किताब, कायदा, कातिल, दुकान, दुनिया, दौलत, दान, दीन, नतीजा, नशा, नकद, नक़ल, नहर, फ़कीर, फायदा, फैसला, ख़त्म, खत, ख्याल, ख़राब, खिदमत, गरीब, गैर, जाहिल, जिस्म, जलसा, जनाब, जवाब, जहाज, जालिम, जिक्र, हमला, हवालात, हौसला, आखिर, आदत, आदमी, इनाम, इज्जत, ईमारत, इस्तीफ़ा, तादात, तरक्की, तारिख, तकिया, तमाशा, दिमाग, दवा, दावत, दफ्तर,

दुआ, बहस, मुहावरा, मदद, मजबूर, मामूली, मुक़दमा, मुल्क, मौसम, मौका, मशहूर, मतलब, वकील, शराब, हैजा, आदि ।

फारसी शब्द

आराम, आवारा, आमदनी, आवाज, उम्मीद, किनारा, खुद, खामोश खरगोश, गवाह, गिरफ्तार, गरम, गुलाब, चूँकि, चेहरा, चाशनी, जिन्दगी, तेज, तीर, तनख्वाह, दीवार, देहात, दुकान, दरबार, दंगल, दिल, दिलेर, दरबार, दवा, नाव, पैदावार, पुल, पारा, बीमार, बेरहम आदि।

तुर्की शब्द

कालीन, कैंची, कुली, कुर्की, चेचक, उर्दू, मुग़ल, काबू, चमचा, तोप, तमगा, तलाश, बेगम, बहादुर, लाश, लफंगा, सौगात, सुराग आदि ।

पुर्तगाली शब्द

आलमारी, बाल्टी, चाबी, फीता, तम्बाकू, इस्पात, कमीज, कमरा, काजू, गमला, गोदाम, पादरी, परात, गोभी, तौलिया, नीलाम, परत, मेज आदि ।

अंग्रेजी शब्द

ड्राइवर, पेंसिल, पेन, नंबर, थर्मामीटर, पेट्रोल, आर्डर, इंटर, इयरिंग, कमीशन, कैम्प, क्वार्टर, क्रिकेट, गार्ड, जेल, चेयरमैन, ट्यूशन, नोटिस, नर्स, पार्टी, प्लेट, इंजन, डॉक्टर, लालटेन, सिलेट, अस्पताल, पार्सल, पाउडर, कॉलर, अफसर, कप्तान, बोतल, मील, अपील, इंच, एजेंसी, कंपनी, कमिश्नर, क्लास, काउन्सिल, गजट, डायरी, डिग्री आदि ।

संकर शब्द

संकर शब्द :- ये वे शब्द होते है जो दो अलग- अलग भाषाओं के शब्दों को मिलाकर बना लिए गए हो।

जैसे :-

- रेल (अंग्रेजी) गाड़ी (हिन्दी) - रेलगाड़ी
- उड़न (संस्कृत) तश्तरी (हिन्दी) - उड़नतश्तरी

मुहावरे

मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है बातचीत करना या उत्तर देना। मुहावरे भाषा को सरल, गतिशील और रुचिकर बनाते हैं

कुछ महत्वपूर्ण मुहावरे

- मुहावरा - आँख दिखाना

  अर्थ - क्रोध से देखना, रोकना, धमकाना

  वाक्य प्रयोग - गलती भी करते हो और ऊपर से आँखें भी दिखाते हो।

- मुहावरा - आँखों में धूल झोंकना

  अर्थ - सरे आम धोखा देना

  वाक्य प्रयोग – फल वाले ने मेरी आँखों में धूल झोंककर मुझे सड़े-गले फल दे दिए

- मुहावरा - आखें फेर लेना

  अर्थ - पहले जैसा व्यवहार न रखना

  वाक्य प्रयोग - जब से उसे नौकरी मिली है, उसने माँ बाप, यार दोस्त सबसे आँखें फेर ली है

- मुहावरा - - आँखे लाल करना

  अर्थ - - क्रोध से देखना

  वाक्य प्रयोग - अपने दुश्मन को देखकर उसकी आँखे लाल हो गई।

- मुहावरा - खून-पसीना एक करना

  अर्थ - - बहुत कठिन परिश्रम करना

  वाक्य प्रयोग - - सोनू खून-पसीना एक करके दो पैसे कमाता हैं।

- मुहावरा - गले का हार होना

  अर्थ - - बहुत प्यारा

  वाक्य प्रयोग - लक्ष्मण राम के गले का हार थे।

कुछ अन्य महत्वपूर्ण मुहावरे

मुहावरा	अर्थ
आस्तिन का सांप होना	कपटी मित्र
आसमान टूट पड़ना	अचानक मुसीबत आ जाना
ईंट का जवाब पत्थर से देना	करारा जवाब देना
ईद का चाँद होना	बहुत कम दिखाई देना
उड़ती चिड़िया के पंख गिनना	अत्यन्त चतुर होना
ऊंट के मुंह में जीरा होना	अधिक खुराक वाले को कम देना
एड़ी चोटी का जोर लगाना	बहुत प्रयास करना
ओखली में सिर देना	जान बूझकर मुसीबत मोल लेना
काठ का उल्लू होना	मूर्ख होना
कान खड़े होना	सावधान हो जाना

कुएं में बांस डालना	बहुत खोजबीन करना
कलई खुलना	पोल खुलना
गूलर का फूल होना	दुर्लभ होना
घाट-घाट का पानी पीना	अनुभवी होना
चिकना घड़ा होना	बात का असर न होना
छाती पर मूंग दलना	पास रहकर दिल दुःखाना
टेढ़ी खीर होना	कठिन कार्य
नाकों चने चबाना	बहुत सताना
सब्जबाग दिखाना	झूठी आशा देना

लोकोक्ति

बहुत अधिक प्रचलित और लोगों के मुँहचढ़े वाक्य लोकोक्ति के तौर पर जाने जाते हैं। इन वाक्यों में जनता के अनुभव का निचोड़ या सार होता है।

महत्वपूर्ण लोकोक्तियाँ

मुहावरा / कहावत	अर्थ / व्याख्या
अन्धों में काना राजा	मूर्खों में कुछ पढ़ा-लिखा व्यक्ति

अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गई खेत	समय निकल जाने के पश्चात् पछताना व्यर्थ होता है
अन्धा क्या चाहे दो आँखें	मनचाही बात हो जाना
अंधेर नगरी चौपट राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा	जहाँ मालिक मूर्ख हो वहाँ सद्गुणों का आदर नहीं होता।
अक्ल के अंधे, गाँठ के पूरे	बुद्धिहीन, किन्तु धनवान
अपने मुँह मियाँ मिट्ठू	अपनी बड़ाई या प्रशंसा स्वयं करने वाला
अन्त भला तो सब भला	परिणाम अच्छा हो जाए तो सब कुछ माना जाता है।
अंधे की लकड़ी	बेसहारे का सहारा
अपनी छाछ को कोई खट्टा नहीं कहता	अपनी चीज को कोई बुरा नहीं बताता
अपनी नींद सोना, अपनी नींद जागना	पूर्ण स्वतंत्र होना
ओखली में सिर दिया, तो मूसलों से क्या डर	काम करने पर उतारू होना
आ बैल मुझे मार	स्वयं मुसीबत मोल लेना
आम के आम गुठलियों के दाम	अधिक लाभ
आगे कुआँ, पीछे खाई	दोनों तरफ विपत्ति या परेशानी होना
आसमान से गिरे खजूर में अटके	एक मुसीबत खत्म न हो उससे पहले दूसरी मुसीबत आ जाए

आदमी पानी का बुलबुला है	मनुष्य जीवन नाशवान है।
इसके पेट में दाढ़ी है	उम्र कम बुद्धि अधिक
ऊँट के मुँह में जीरा	जरूरत के अनुसार चीज न होना

सन्धि

दो वर्णों या अक्षरों के मेल को संधि कहते है। जब दो वर्ण पास-पास आते हैं या मिलते हैं तो उनमें परिवर्तन हो जाता है। यह परिवर्तन वाला मेल ही संधि कहलाता है।

संधि तीन प्रकार की होती हैं :-

- स्वर संधि
- व्यंजन संधि
- विसर्ग संधि

स्वर संधि :- जब स्वर के साथ स्वर का मेल होता है तब जो परिवर्तन होता है उसे स्वर संधि कहते हैं।

उदहारण :- विद्या + आलय = विद्यालय

स्वर संधि पांच प्रकार की होती हैं

(1) दीर्घ संधि

जब (अ, आ) के साथ (अ, आ) हो तो 'आ' बनता है, जब (इ, ई) के साथ (इ, ई) हो तो 'ई' बनता है, जब (उ, ऊ) के साथ (उ, ऊ) हो तो ' ऊ ' बनता है

उदहारण :- रवि + इंद्र = रविन्द्र, भानु + उदय = भानूदय

(2) गुण संधि

जब (अ, आ) के साथ (इ, ई) हो तो 'ए' बनता है, जब (अ, आ) के साथ (उ, ऊ) हो तो ओ 'बनता है, जब (अ, आ) के साथ (ऋ) हो तो ' अर ' बनता है । उसे गुण संधि कहते हैं।

उदहारण :- नर + इंद्र + नरेंद्र, भारत + इंदु = भारतेन्दु

(3) वृद्धि संधि

जब (अ, आ) के साथ (ए, ऐ) हो तो 'ऐ' बनता है और जब (अ आ) के साथ (ओ, औ) हो तो ' औ' बनता है। उसे वृधि संधि कहते हैं।

उदहारण :- मत+एकता = मतैकता, महा + ओज

(4) यण संधि

जब (इ, ई) के साथ कोई अन्य स्वर हो तो 'य' बन जाता है, जब (उ, ऊ) के साथ कोई अन्य स्वर हो तो ' व् ' बन जाता है, जब (ऋ) के साथ कोई अन्य स्वर हो तो ' र ' बन जाता है।

उदहारण :- इति + आदि इत्यादि, अनु + अय = अन्वय

(5) अयादि संधि

जब (ए, ऐ, ओ, औ) के साथ कोई अन्य स्वर हो तो ' ए का अय, 'ऐ' का 'आय', 'ओ' का 'अव', 'औ' का 'आव' हो जाता है इसे अयादि संधि कहते है।

उदहारण : ने + अन नयन, नौ + इक नाविक, भो + अन = भवन

व्यंजन संधि :- व्यंजन के साथ स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उस व्यंजन में जो रूपान्तरण होता है, उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं।

उदहारण :

- जगत् + नाथ = जगन्नाथ, सत् + चरित्र = सच्चरित्र,
- अनु + स्थान = अनुष्ठान, शरत् + चन्द्र = शरच्चन्द्र,

- आ + छादन = आच्छादन, षट्+ मास = षण्मास

विसर्ग सन्धि :- विसर्ग के साथ स्वर अथवा व्यंजन का मेल होने पर जो विकार होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

उदहारण :-

- मनः+रथ = मनोरथ, दुः + गम = दुर्गम,
- मनः + अनुकूल = मनोनुकूल, दुः+ साहस दुस्साहस, पुनः + च पुनश्च,
- निः + पक्ष = निष्पक्ष, दुः + बल = दुर्बल

वाच्य

जिस क्रिया के द्वारा हमें यह पता चलता है कि वाक्य क्रिया को मुख्य या मूल रूप से चलाने वाला कौन है। अर्थात कर्म,कर्ता भाव, या कोई अन्य घटक है। उसे वाच्य कहते है।

कर्तृवाच्य :-

जिस वाक्य में कर्ता मुख्य हो और क्रिया कर्ता के लिंग, वचन एवं पुरूष के अनुसार हो, उसे कर्तृवाच्य कहते है ।

उदहारण:-

- सचिन ने दूध पीया ।
- सीता गाती है।
- राम सो रहा है।

कर्मवाच्य :-

जिस वाक्य में कर्म मुख्य हो तथा इसकी सकर्मक क्रिया के लिंग, वचन व के अनुसार हो, उसे कर्मवाच्य कहते हैं।

उदहारण :-

- लड़कियों द्वारा बाजार जाया जा रहा है।

- मेरे द्वारा रामायण पढ़ी जा रही है।
- वर्षा से पुस्तक पढ़ी गई।

भाववाच्य :-

क्रिया के जिस रूप में भाव की प्रधानता होती है और क्रिया का सीधा सम्बंध भाव से होता है। उसे भाव वाच्य कहते है। यह केवल अकर्मक क्रिया के वाक्यों में ही प्रयुक्त होता है।

उदहारण:-

- शेर से दहाडा भी नहीं गया
- बच्चों से नदी में तैरा नहीं जाता
- पैदल चला नहीं जाता

समास

जब दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से नया शब्द बनता है तो इस प्रक्रिया को समास कहते है इस प्रकार बना शब्द सामासिक शब्द कहलाता है

जैसे:-

- गंगा का जल - गंगाजल
- राजा का पुत्र - राजपुत्र

समास के छः प्रकार है

- अव्ययीभाव
- तत्पुरुष
- द्विगु
- द्वन्द्व
- बहुव्रीहि
- कर्मधारय

अव्ययीभाव समास

जिन शब्दों के प्रारम्भ में उपसर्ग लगा हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इसमें पहला पद (पूर्व पद) प्रधान होता है और वह अव्यय होता है। जैसे - यथा, निर, आ, अनु, प्र, प्रति, आदि

इसके कुछ उदहारण है जैसे -

- यथामति -मति के अनुसार,
- आजीवन - जीवन-भर
- प्रत्येक - हर एक
- आमरण - मृत्यु तक
- प्रतिमास - प्रत्येक मास
- यथाशक्ति - शक्ति के अनुसार
- यथाविधि - विधि के अनुसार
- यथाक्रम - क्रम के अनुसार
- निस्संदेह - बिना संदेह के
- भरपूर - पूरा भर के

अव्यय :- जिन शब्दों पर लिंग, कारक, काल आदि से भी कोई प्रभाव न पड़े अर्थात जो अपरिवर्तित रहें, वे शब्द अव्यय कहलाते हैं।

तत्पुरुष समास

तत्पुरुष समास वह होता है, जिसमें उत्तरपद प्रधान होता है, अर्थात प्रथम पद गौण होता है एवं उत्तर पद की प्रधानता होती है व समास करते वक़्त बीच की विभक्ति का लोप हो जाता है।

इस समास में आने वाले कारक चिन्हों को, से, के लिए, से, का/के/की, में, पर आदि का लोप होता है।

जैसे -

- विद्या के लिए आलय - विद्यालय
- राजा का पुत्र - राजपुत्र

- जन्म से अँधा - - जन्मांध
- मांस को खाने वाला - मांसाहारी
- शाक को खाने वाला - शाकाहारी
- मूर्ति को बनाने वाला - मूर्तिकार

तत्पुरुष समास के प्रकार

कारक चिन्हों के अनुसार इस समास के छः प्रकार है।

1. कर्म तत्पुरुष समास
2. करण तत्पुरुष समास
3. सम्प्रदान तत्पुरुष समास
4. अपादान तत्पुरुष समास
5. सम्बन्ध तत्पुरुष समास
6. अधिकरण तत्पुरुष समास

1. कर्म तत्पुरुष समास :- यह समास 'को' चिन्ह के लोप से बनता है।

जैसे :

- माखनचोर - माखन को चुराने वाला
- स्वर्गप्राप्त - स्वर्ग को प्राप्त
- गगनचुम्बी - गगन को चूमने वाला
- रथचालक - रथ को चलाने वाला।

2. करण तत्पुरुष समास :- यह समास दो कारक चिन्हों 'से' और 'के द्वारा' के लोप से बनता है।

जैसे:-

- शोकाकुल - शोक से आकुल,
- करुणापूर्ण - करुणा से पूर्ण,

- अकालपीड़ित - अकाल से पीड़ित,
- भुखमरा - भूख से मरा

3. सम्प्रदान तत्पुरुष समास :- इस समास में कारक चिन्ह ' के लिए' का लोप हो जाता है।

जैसे:

- सत्याग्रह - सत्य के लिए आग्रह,
- प्रयोगशाला - प्रयोग के लिए शाला,
- रसोईघर - रसोई के लिए घर,
- यज्ञशाला - यज्ञ के लिए शाला,
- देशभक्ति - देश के लिए भक्ति,
- विद्यालय - विद्या के लिए आलय

4. अपादान तत्पुरुष समास :- इस समास में अपादान कारक के चिन्ह 'से' का लोप हो जाता है।

जैसे:-

- जीवनमुक्त - जीवन से मुक्त
- ऋणमुक्त - ऋण से मुक्त
- रोगमुक्त - रोग से मुक्त
- पापमुक्त - पाप से मुक्त
- बंधनमुक्त बंधन से मुक्त
- नेत्रहीन - नेत्र से हीन
- धनहीन धन से हीन
- गुणहीन : गुण से ही
- विद्यारहित - विद्या से रहित
- पथभ्रष्ट : पथ से भ्रष्ट

5. सम्बन्ध तत्पुरुष समास :- सम्बन्ध कारक के चिन्ह 'का', 'के' व 'की' का लोप होता है वहां सम्बन्ध तत्पुरुष समास होता है।

जैसे:-

- जलधारा - जल की धारा,
- गृहस्वामी - गृह का स्वामी,
- भूदान - भू का दान,
- सेनापति - सेना का पति,
- पुष्पवर्षा - पुष्पों की वर्षा,
- राष्ट्रगौरव : राष्ट्र का गौरव,
- उद्योगपति - उद्योग का पति,
- देशरक्षा : देश की रक्षा

6. अधिकरण तत्पुरुष समास :- इस समास में कारक चिन्ह 'में' और 'पर' का लोप होता है।

जैसे:-

- ग्रामवास : ग्राम में वास,
- गृहप्रवेश : गृह में प्रवेश,
- जलसमाधि : जल में समाधि,
- पर्वतारोहण : पर्वत पर आरोहण,
- जलज : जल में जन्मा,
- आपबीती: आप पर बीती

द्विगु समास

जहाँ उत्तर पद प्रधान हो तथा एक शब्द विशेषण तथा दूसरा विशेष्य होता है, किंतु कर्मधारय से इतना अंतर होता है कि इसमें विशेषण शब्द संख्यावाचक होता है। इसे द्विगु समास कहते हैं। जिस शब्द में पहला शब्द संख्या का आए वहां हमेशा द्विगु समास होता है। परंतु इसके कुछ अपवाद भी हैं जैसे- त्रिनेत्र, त्रिलोचन, चतुर्भुज (विष्णु), एकदंत (गणेश) चतुरानन (ब्रह्मा), दशानन(रावण), त्रिशूल ये सभी संख्यावाची होते हुए भी बहुब्रीहि समास है ।

द्विगु समास के कुछ उदहारण

- त्रिकोण - - तीन कोणों का समाहार
- चौराहा - चार राहों का समाहार
- त्रिफला - तीन फलों का समाहार
- चौमासा - चार मासों का समूह
- सप्ताह - सप्त दिनों का समूह
- त्रिवेणी - तीन वेणियों (नदियों) का समाहार
- सप्त सिंधु - - सात सिंधुओं का समूह
- सप्तर्षि - सप्त ऋषियों का समूह
- पंचतंत्र - पाँच तंत्रों का समूह
- चतुर्भुज - चार भुजाओं (रेखाओं) का समाहार

द्वंद्व समास -

जिस समास में दोनो पद प्रधान होते हैं, द्वंद्व समास कहलाता है। इस समास के विग्रह में शब्दों के बीच से योजक चिन्ह हटाकर 'और' जोड़ा जाता है। इस समास में सम्मिलित शब्दों में योजक चिन्ह लगा होता है। इस समास में ऐसे शब्द सम्मिलित है जिनमें दोनों शब्द (पूर्व और उत्तर पद) का बराबर महत्व है। जो एक दूसरे के पूरक है। जैसे- रात दिन, राजा रानी, दाल रोटी, माता पिता आदि।

अन्य महत्वपूर्ण उदहारण

- सुख-दुख - सुख और दुख
- दूध-दही - दूध और दही
- लेन-देन - लेन और देन
- हानि-लाभ - हानि और लाभ
- पाप-पुण्य - पाप और पुण्य
- ऊँचा - नीचा - ऊँचा और नीचा
- दाल-चावल - दाल और चावल
- भला-बुरा - भला या बुरा
- पाप-पुण्य - पाप और पुण्य

- दाल रोटी - दाल और रोटी

बहुब्रीहि समास

ऐसे शब्दों का मेल, जिनमें दोनो पद प्रधान न हो अर्थात जिसमें प्रयुक्त शब्द स्वयं प्रधान न रहकर किसी तीसरे शब्द की ओर संकेत करें या दोनों शब्द मिलकर एक विशेष संज्ञा का अर्थ दें, तो उसे 'बहुब्रीहि समास' कहते हैं। ये 'योगरूद' शब्द होते हैं। जैसे- दशानन दश है आनन (मुख) जिसके अर्थात् रावण

कुछ महत्वपूर्ण उदहारण

- नीलकंठ - भगवान शिव / मोर
- पवनपुत्र - हनुमान जी
- एकदंत - गणेश जी
- चक्रधर - भगवान विष्णु
- गजानन - गणेश जी
- लंबोदर - गणेश जी
- पीतांबर - भगवान कृष्ण
- चतुरानन - भगवान ब्रह्मा
- वीणापाणि – सरस्वती जी
- चंद्रमौलि - शिव जी
- त्रिपुरारी - शिव जी

कर्मधारय समास

वह समास जिसका पहला पद विशेषण एवं दूसरा पद विशेष्य होता है अथवा पूर्वपद एवं उत्तरपद में उपमान - उपमेय का सम्बन्ध माना जाता है कर्मधारय समास कहलाता है।

इस समास का उत्तरपद प्रधान होता है एवं विगृह करते समय दोनों पदों के बीच में 'के सामान', 'है जो', में से किसी एक शब्द का प्रयोग होता है।

कुछ महत्वपूर्ण उदहारण

- घनश्याम - बादल के समान काला
- काली मिर्च - काली है जो मिर्च
- ग्रंथ रत्न - रत्न है जो ग्रंथ
- कमलनयन - कमल के समान नयन
- नीलकमल - नीला है जो कमल
- पीतांबर - पीला है जो वस्त्र
- महात्मा - महान है जो आत्मा
- सज्जन – सच्चा है जो जन

अलंकार

काव्यों की सुंदरता बढ़ाने वाले यंत्रों को ही अलंकार कहते हैं। जिस प्रकार मनुष्य अपनी सुंदरता बढ़ाने के लिए विभिन्न आभूषणों का प्रयोग करते हैं उसी तरह काव्यों की सुंदरता बढ़ाने के लिए अलंकारों का उपयोग किया जाता है।

अलंकार के चार भेद हैं-

1. शब्दालंकार,
2. अर्थालंकार,
3. उभयालंकार और
4. पाश्चात्य अलंकार।

मुख्य रूप से अलंकार के दो भेद होते हैं :

1. शब्दालंकार
2. अर्थालंकार

शब्दालंकार के भेद:

1. अनुप्रास अलंकार 2. यमक अलंकार 3. श्लेष अलंकार

1. अनुप्रास अलंकार :- जब किसी काव्य को सुंदर बनाने के लिए किसी वर्ण की बार-बार आवृति हो तो वह अनुप्रास अलंकार कहलाता है। किसी विशेष वर्ण की आवृति से वाक्य सुनने में सुंदर लगता है। जैसे :- चारु चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही थी जल थल में ।

इस उदाहरण में 'च' वर्ण की आवृति हो रही है और आवृति से वाक्य का सौन्दर्य बढ़ रहा है। अतः यह अनुप्रास अलंकार का उदाहरण है।

2. यमक अलंकार :- जिस प्रकार अनुप्रास अलंकार में किसी एक वर्ण की आवृति होती है उसी प्रकार यमक अलंकार में किसी काव्य का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए एक शब्द की बार-बार आवृति होती है। दो बार प्रयोग किए गए शब्द का अर्थ अलग हो सकता है । जैसे :- काली घटा का घमंड घटा।

यहाँ 'घटा' शब्द की आवृत्ति भिन्न-भिन्न अर्थ में हुई है। पहले 'घटा' शब्द 'वर्षाकाल' में उड़ने वाली 'मेघमाला' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है और दूसरी बार 'घटा' का अर्थ है 'कम हुआ' । अतः यहाँ यमक अलंकार है ।

3. श्लेष अलंकार :- श्लेष अलंकार ऊपर दिये गए दोनों अलंकारों से भिन्न है । श्लेष अलंकार में एक ही शब्द के विभिन्न अर्थ होते हैं। जैसे:

'रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून ।

पानी गए न ऊबरे मोती मानस चून।।'

इस दोहे में रहीम ने पानी को तीन अर्थों में प्रयोग किया है। पानी का पहला अर्थ मनुष्य के संदर्भ में है जब इसका मतलब विनम्रता से है। रहीम कह रहे हैं कि मनुष्य में हमेशा विनम्रता (पानी) होना चाहिए। पानी का दूसरा अर्थ आभा, तेज या चमक से है जिसके बिना मोती का कोई मूल्य नहीं।

पानी का तीसरा अर्थ जल से है जिसे आटे (चून) से जोड़कर दर्शाया गया है। रहीम का कहना है कि जिस तरह आटे का अस्तित्व पानी के बिना नम्र नहीं हो सकता और मोती का मूल्य उसकी आभा

बिना नहीं हो सकता है, उसी तरह मनुष्य को भी अपने व्यवहार में हमेशा पानी (विनम्रता) रखना चाहिए जिसके बिना उसका मूल्यह्रास होता है। अतः यह उदाहरण श्लेष के अंतर्गत आएगा।

अर्थालंकार

अर्थालंकार के भेद: अर्थालंकार के मुख्यत: पाँच भेद होते हैं

- उपमा अलंकार
- रूपक अलंकार
- उत्प्रेक्षा अलंकार
- अतिशयोक्ति अलंकार
- मानवीकरण अलंकार

1. उपमा अलंकार :- जब दो भिन्न वस्तुओं में समानता दिखाई जाती है, तब वहाँ उपमा अलंकार होता है

उपमा अलंकार में चार बाते होती है

- उपमेय - जिसका वर्णन किया जाता है या जिसकी तुलना की जाती है
- उपमान - जिससे तुलना की जाती है
- साधारण धर्म - जिस गुण, दोष या विषेशता की तुलना की जाती है
- वाचक शब्द - तुलना का बोध करने वाला शब्द

उदाहरण:-

पीपर पात सरिस मन डोला ।

इस उदाहरण में मन को पीपल के पत्ते कि तरह हिलता हुआ बताया जा रहा है। इस उदाहरण में 'मन' - उपमेय है, 'पीपर पात' - उपमान है, 'डोला' उपमान है, 'डोला' – साधारण धर्म है एवं 'सरिस' ('के सामान') - वाचक शब्द है । जब दो वस्तुओं की उनके एक सामान धर्म की वजह से तुलना की जाती है तब वहां उपमा अलंकार होता है ।

2. रूपक अलंकार :- जब उपमान और उपमेय में अभिन्नता या अभेद दिखाया जाए तब यह रूपक अलंकार कहलाता है। जैसे: **"मैया मैं तो चन्द्र-खिलौना लैहों"**

इस उदाहरण में चन्द्रमा एवं खिलोने में समानता न दिखाकर चाँद को ही खिलौना बोल दिया गया है । अतएव यह रूपक अलंकार होगा।

3. उत्प्रेक्षा अलंकार :- जहाँ उपमेय में उपमान के होने की संभावना का वर्णन हो तब वहां उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। यदि पंक्ति में - मनु, जनु, जनहु, जानो, मानहु मानो, निश्चय, ईव, ज्यों आदि आता है बहां उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। जैसे:

ले चला साथ मैं तुझे कनक । ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण ।

इस उदाहरण में कनक का अर्थ धतुरा है । कवि कहता है कि वह धतूरे को ऐसे ले चला मानो कोई भिक्षु सोना ले जा रहा हो। काव्यांश में 'ज्यों' शब्द का इस्तेमाल हो रहा है एवं कनक -

उपमेय में स्वर्ण - उपमान के होने कि कल्पना हो रही है। इसलिए यह उदाहरण उत्प्रेक्षा अलंकार के अंतर्गत आएगा ।

4. अतिशयोक्ति अलंकार :- जब किसी बात का वर्णन बहुत बढ़ा-चढ़ाकर किया जाए तब वहां अतिशयोक्ति अलंकार होता है। जैसे :

आगे नदियाँ पड़ी अपार, घोडा कैसे उतरे पार । राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार ।

इस उदाहरण में चेतक की शक्तियों व स्फूर्ति का बहुत बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया गया है। अतएव यहाँ पर अतिशयोक्ति अलंकार होगा।

5. मानवीकरण अलंकार :- जब प्राकृतिक चीज़ों में मानवीय भावनाओं के होने का वर्णन हो तब वहां मानवीकरण अलंकार होता है। जैसे :

फूल हँसे कलियाँ मुस्कुराई ।

इस उदाहरण में फूलों के हंसने का वर्णन किया गया है जो मनुष्य करते हैं अतएव यहाँ मानवीकरण अलंकार है ।

रस

रस शब्द आनन्द का पर्याय है। रसवादी आचार्यों ने काव्य मे रस को ही मुख्य माना है। उन्होंने रस को काव्य की आत्मा कहा हैं। जैसे आत्मा के बिना शरीर का कोई मूल्य नही उसी प्रकार रस के बिना काव्य भी निर्जीव माना जाता हैं।

कविता, कहानी, नाटक आदि पढ़ने, सुनने या देखने से पाठक को जो एक प्रकार के विलक्षण आनन्द की अनुभूति होती है उसे रस कहते हैं।

रस एवं उनके स्थायी भाव

1. श्रृंगार रस का स्थायी भाव = रति
2. हास्य रस का स्थायी भाव = हास
3. करुण रस का स्थायी भाव = शोक
4. रौद्र रस का स्थायी भाव = क्रोध
5. वीभत्स रस का स्थायी भाव = जुगुप्सा
6. भयानक रस का स्थायी भाव = भय
7. अद्धभुत रस का स्थायी भाव = विस्मय
8. वीर रस का स्थायी भाव = उत्साह
9. शान्त रस का स्थायी भाव = निर्वेद
10. वात्सल्य रस का स्थायी भाव वत्सल

तत्सम तद्भव शब्द

तत्सम शब्द

तत्सम दो शब्दों से मिलकर बना है - तत + सम तत का अर्थ है 'उसके' तथा सम का अर्थ है 'समान' अत: तत्सम शब्द ऐसे शब्द होते हैं, जिन्हें संस्कृत भाषा से 'ज्यों का त्यों' बिना किसी परिवर्तन के हिंदी भाषा में शामिल कर लिया गया है।

तद्भव शब्द

समय और परिस्थिति की वजह से तत्सम शब्दों में जो परिवर्तन हुए हैं उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं। संस्कृत के जो शब्द प्राकृत, अपभ्रंश, पुरानी हिन्दी आदि से गुजरने के कारण आज परिवर्तित रूप में मिलते हैं, वे तद्भव शब्द कहलाते हैं।

'तद्भव' (तत् + भव) शब्द का अर्थ है संस्कृत शब्दों को थोड़ा परिवर्तित करकर बने शब्द।

तत्सम और तद्भव शब्दों को पहचानने के नियम :-

- तत्सम शब्दों के अंत में 'क्ष' वर्ण आता है वहीं उसके तद्भव रूप में 'क्ष' स्थान में 'ख' या 'छ' वर्ण का प्रयोग होता है।
- तत्सम शब्दों में जहां पर 'व' का प्रयोग होता है वहीं तद्भव शब्द में 'व' की जगह 'ब' का प्रयोग होता है।
- तत्सम शब्दों में 'ष' वर्ण का प्रयोग किया जाता है।
- तत्सम शब्दों में 'ऋ' की मात्रा का प्रयोग होता है। वहीं तद्भव शब्दों में 'र' का प्रयोग किया जाता है।
- तत्सम शब्दों में जहां पर श्र' का प्रयोग होता है वहीं तद्भव शब्द में 'श्र' की जगह 'स' का प्रयोग होता है।
- तत्सम शब्दों में 'श' का प्रयोग होता है और तद्भव शब्दों में ' स' का प्रयोग हो जाता है। तत्सम शब्दों में ' र ' की मात्रा का प्रयोग होता है।

वे शब्द जो अनेक शब्दों या वाक्य के स्थान पर अकेले ही प्रयोग किये जाते हैं।

शब्द	शब्द
अपने ऊपर निर्भर रहने वाला	आत्मनिर्भर
अपनी इच्छा से सेवा करने वाला	स्वयंसेवक
अचानक घटित होने वाला	आकस्मिक

अच्छे आचरण वाला	सदाचारी
अच्छी सहनशक्ति वाला	(सहनशील)
आकाश में विचरण करने वाला	नभचर
आकाश को चूमने वाला	गगनचुंबी
आदि से अंत तक	आद्योपांत
इतिहास से संबंधित	ऐतिहासिक
कम बोलने वाला	अल्पभाषी
किए हुए उपकार को मानने वाला	कृतज्ञ
गंगा का उदगम स्थान	गंगोत्री
चन्द्रमा के समान मुख वाली	चंद्रमुखी
चारों वेदों को जानने वाला	चतुर्वेदी
जल में विचरण करने वाला / पानी में रहने वाला	जलचर
जनता द्वारा चलाया जाने वाला राज्य	प्रजातंत्र / जनतंत्र

जीने की प्रबल इच्छा	जिजीविषा
जिस पुरुष की पत्नी मर गई हो	विधुर
जिसे जाना न जा सके	अज्ञेय
जिसका कोई आकार न हो	निराकार
जिसका कोई शत्रु न हो	अजातशत्रु
जिसकी उपमा न हो सके	अनुपम
जो ईश्वर में विश्वास रखता हो	आस्तिक
जो ईश्वर में विश्वास न रखता हो	नास्तिक
जो इस संसार से अलग की वस्तु हो	अलौकिक
जो दो भाषाएँ जानता हो	दुभाषिया
जो दूसरों पर उपकार करे	परोपकारी
जो फल-सब्जी खाता हो	शाकाहारी
जो मांस खाता हो	मांसाहारी
हिरण जैसी आँखों वाली	मृगनैनी

जो मीठा बोलता हो	मृदुभाषी
जो हाथों से लिखा हो	हस्तलिपि / पांडुलिपि
दूसरों से ईर्ष्या रखने वाला	ईर्ष्यालु
दूसरों का बुरा चाहने वाला	कुटिल
परस्पर एक दूसरे पर आश्रित	अन्योन्याश्रित

शब्द शुद्धि

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
अशीर्वाद	आशीर्वाद
परवारिक	पारिवारिक
पत्रि	पत्री
एच्छिक	ऐच्छिक
वेधानिक	वैधानिक
सुक्ति	सूक्ति

वेदिक	वैदिक
कोआ	कौआ
पती	पति
परलोकिक	पारलौकिक
प्रमाणिक	प्रामाणिक
अधुनिक	आधुनिक
रसायनिक	रासायनिक
धैर्य	धैर्य
वेवाहिक	वैवाहिक
ओचित्य	औचित्य
बिमार	बीमार
एनक	ऐनक
निरस	नीरस
एक्य	ऐक्य
अधुरा	अधूरा
ओरत	औरत

अनुकुल	अनुकूल
कोख	कौख
सुरदास	सूरदास
योवन	यौवन
लोकी	लौकी
तत्य	तथ्य
आंख	आँख
रामायन	रामायण
कांपना	काँपना
वैस्नव	वैष्णव
चांद	चाँद
कल्यान	कल्याण
छत्री	क्षत्रिय
नबाव	नवाब
छार	क्षार
कनिष्ट	कनिष्ठ

वरिष्ट	वरिष्ठ
घनिष्ट	घनिष्ठ
सांप	साँप
जाचना	याचना
जुवती	युवती
छमा	क्षमा
छिन	क्षण
बिवाह	विवाह
आदरनीय	आदरणीय
बानर	वानर
स्वरूप	स्वरूप
रामचंन्दर	रामचन्द्र
मिरच	मिर्च
किरपा	कृपा
बचन	वचन
रिचा	ऋचा

झूट	झूठ
रिषी	ऋषि
अतः एव	अतएव
करोर	करोड़
ततागत	तथागत
करम	कर

आदिकाल

हिन्दी साहित्य के इतिहास में लगभग 8वीं शताब्दी से लेकर 14वीं शताब्दी के मध्य तक के काल को आदिकाल कहा जाता है। इस युग को यह नाम डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी से मिला है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'वीरगाथा काल' तथा विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इसे 'वीरकाल' नाम दिया है। इस काल की समय के आधार पर साहित्य का इतिहास लिखने वाले मिश्र बंधुओं ने इसका नाम प्रारंभिक काल किया और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने बीजवपन काल। डॉ. रामकुमार वर्मा ने इस काल की प्रमुख प्रवृत्तियों के आधार पर इसको चारण- काल कहा है और राहुल संकृत्यायन ने सिद्ध-सामन्त काल।

इस समय का साहित्य मुख्यतः चार रूपों में मिलता है :

- सिद्ध साहित्य तथा नाथ-साहित्य,
- जैन साहित्य,
- चारणी साहित्य,
- प्रकीर्णक साहित्य।

इस काल में रासो साहित्य की तीन प्रवृतियाँ देखने को मिलती है

- वीरगाथात्मक - पृथ्वीराज रासो, हम्मीर रासो, परमाल रासो

- धार्मिकता - भारतेश्वर बाहुबली रास
- श्रृंगारिकता - संदेश रासक

वीरगाथाकाल के प्रमुख कवियों तथा उनकी रचनाओं के नाम।

- दलपति विजय - खुमान रासो,
- चन्दबरदाई - पृथ्वीराज रासो,
- शारंगधर - हमीर रासो,
- नल्ल सिंह - विजयपाल रासो,
- जगनिक परमाल रासो या आल्हा खण्ड,
- नरपति नाल्ह - बीसलदेव रासो,
- मधुकर - जयमयंक जसचन्द्रिका।

- खड़ी बोली के आदि-कवि अमीर खुसरो इसी समय हुए है। खुसरो की पहेलियां और मुकरियां प्रख्यात हैं। मैथिल कोकिल विद्यापति भी इसी समय के अंतर्गत हुए हैं।
- विद्यापति के मधुर पदों के कारण इन्हें 'अभिनव जयदेव' भी कहा जाता है। मैथिली और अवहट्ट में भी इनकी रचनाएं मिलती हैं। इनकी पदावली का मुख्य रस श्रृंगार माना गया है।

भक्ति काल

आदिकाल के बाद आये इस युग को पूर्व मध्यकाल भी कहा जाता है। जिसकी समयावधि संवत् 1343ई से संवत् 1643ई तक की मानी जाती है। यह हिंदी साहित्य (साहित्यिक दो प्रकार के हैं- धार्मिक साहित्य और लौकिक साहित्य) का श्रेष्ठ युग है। जिसको जॉर्ज ग्रियर्सन ने स्वर्णकाल, श्यामसुन्दर दास ने स्वर्णयुग, आचार्य राम चंद्र शुक्ल ने भक्ति काल एवं हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक जागरण कहा। सम्पूर्ण साहित्य के श्रेष्ठ कवि और उत्तम रचनाएं इसी में प्राप्त होती हैं।

सगुण भक्ति

- रामाश्रयी शाखा
- कृष्णाश्रयी शाखा

निर्गुण भक्ति

- सन्त काव्य धारा इसे 'ज्ञानाश्रयी शाखा' भी कहते हैं।
- सूफी काव्य धारा सूफी काव्य को प्रेमाख्यानक काव्य, प्रेमगाथा काव्य परम्परा, प्रेममार्गी शाखा भी कहा जाता है।

रामाश्रयी शाखा

- तुलसीदास हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। ये रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि माने जाते है। तुलसीदास के मानस एवं केशव की रामचंद्रिका में सभी रस देखे जा सकते हैं। रामभक्ति के रसिक संप्रदाय के काव्य में श्रृंगार रस को प्रमुखता मिली है। मुख्य रस यद्यपि शांत रस ही रहा। रामकाव्य में मुख्यत: अवधी भाषा प्रयुक्त हुई है। किंतु ब्रजभाषा भी इस काव्य का श्रृंगार है रामचरितमानस की अवधी प्रेमकाव्य की अवधी भाषा की अपेक्षा अधिक साहित्यिक है। रामकाव्य की रचना अधिकतर दोहा - चौपाई में हुई है
- विनयपत्रिका तुलसीदास रचित एक ग्रंथ है। यह ब्रज भाषा में रचित है । विनय पत्रिका में विनय के पद है। विनयपत्रिका का एक नाम राम विनयावली भी है । विनय पत्रिका में 21 रागों का प्रयोग हुआ है । विनय पत्रिका का प्रमुख रस शांतरस है तथा इस रस का स्थाई भाव निर्वेद होता है।

कृष्णाश्रयी शाखा

- कृष्ण-काव्य-धारा के मुख्य प्रवर्तक हैं- श्री वल्लभाचार्य। उन्होंने निम्बार्क, मध्व और विष्णुस्वामी के आदर्शों को सामने रखकर श्रीकृष्ण का प्रचार किया। श्री वल्लभाचार्य द्वारा प्रचारित पुष्टिमार्ग में दीक्षित होकर सूरदास आदि अष्टछाप के कवियों ने कृष्ण-भक्ति-साहित्य की रचना की। वल्लभाचार्य ने पुष्टिमार्ग का प्रचार-प्रसार किया । जिसका अर्थ है- भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति से उनकी कृपा और अनुग्रह की प्राप्ति करना ।
- अष्टछाप के कवि - कुम्भनदास, सूरदास, परमानन्ददास, कृष्णदास, चतुर्भुजदास, नंददास, छीतस्वामी, गोविंदस्वामी

निर्गुण धारा

(i) सन्त काव्य धारा

इसे 'ज्ञानाश्रयी शाखा' भी कहते हैं।

संत काव्य धारा के प्रमुख कवि एवं उनकी कृतियाँ

- कबीर (1398-1518 ई.) - साखी, सबद, रमैनी । इन तीनों का संकलन 'बीजक' नाम से कबीर के शिष्य धर्मदास ने किया।
- रैदास (1398-1448 ई.) - रविदास की बानी ।
- गुरु नानक (1469-1538 ई.) - जपुजी, रहिरास, असा दी - वार सोहिला - गुरु ग्रन्थ साहब में
- संकलित हैं।
- हरिदास निरंजनी (1455-1543 ई.) - अष्टपदी, जोगग्रन्थ, ब्रह्मस्तुति, हंस प्रबोध ।
- दादू दयाल (1544-1603 ई.) - हरडे वाणी, अंगवधू ।
- मलूकदास (1574-1682 ई.) - ज्ञानदीप, रतनखान, भक्तिविवेक, राम अवतार लीला, चरित।
- सुन्दरदास (1596-1689 ई.) ज्ञानसमुद, सुन्दर विलास ।

संतकाव्य की विशेषताएँ

- निर्गुणोपासना,
- बाह्याडम्बरों का खण्डन,
- नारी विषयक दृष्टिकोण,
- शान्त रस की प्रधानता ।
- अद्वैतवादी दर्शन,
- जाति प्रथा का विरोध,
- अपरिष्कृत भाषा,

(ii) सूफी काव्य धारा

सूफी काव्य को प्रेमाख्यानक काव्य, प्रेमगाथा काव्य परम्परा, प्रेममार्गी शाखा भी कहा जाता है।

हिन्दी सूफी काव्य के प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ

लेखक / रचयिता	रचना / ग्रंथ	वर्ष (ई.स.)
जायसी	पद्मावत	1540 ई.
मुल्ला दाउद	चंदायन	1379 ई.
कुतुबन	मृगावती	1503 ई.
मंझन	मधुमालती	1545 ई.
खनवी	ज्ञानदीप	1619 ई.
नूर मुहम्मद	इन्द्रावती	1744 ई.

सूफी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ

- अलौकिक प्रेम की व्यंजना,
- मसनवी शैली,
- कथा संगठन का सौन्दर्य,
- लोक पक्ष एवं हिन्दू संस्कृति का चित्रण,
- वस्तु वर्णन,
- भाव एवं व्यंजना,
- खण्डन - मण्डन का अभाव
- वियोग वर्णन की प्रधानता।
- प्रबन्ध काव्यों की रचना

रीतिकाल

अन्य नाम-उत्तर मध्यकाल, श्रृंगार काल, अलंकृत काल, कलाकाल। रीति निरूपण (काव्यांगों के लक्षण, उदाहरण वाले ग्रन्थ-रीति ग्रन्थ या लक्षण ग्रन्थ कहे जाते हैं) की प्रधानता होने से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसे रीतिकाल नाम दिया। श्रृंगार काल नाम विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने दिया तथा

अलंकृत काल - मिश्रबंधुओं ने कला की प्रधानता देखकर कुछ विद्वानों ने इसे कला काल नाम भी दिया है। रीतिकाल के वर्ग रीतिकालीन कवियों को तीन वर्गों में बाँटा गया है

रीतिबद्ध जिन्होंने लक्षण ग्रन्थ (रीति ग्रन्थ) लिखकर रीति निरूपण किया, जैसे-देव, केशवदास, चिन्तामणि आदि।

रीतिमुक्त-जो रीति के बंधन से पूरी तरह मुक्त हैं, जैसे- घनानन्द, बोधा, आलम, ठाकुर।

रीति सिद्ध - जिन्हें रीति की जानकारी थी, परन्तु उन्होंने लक्षण ग्रन्थ। नहीं लिखा, जैसे- बिहारी। रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारी हैं। उनके ग्रन्थ का नाम है सतसई। बिहारी सतसई का सम्पादन रत्नाकर ने 'बिहारी रत्नाकर' के नाम से किया है। बिहारी सतसई के दोहों की कुल संख्या 713 है।

रीतिकाल के प्रमुख कवि

- चिन्तामणि - कविकुल कल्पतरु, काव्य विवेक, श्रृंगार मंजरी, रस विलास।
- भूषण - - शिवराज भूषण, छत्रसाल दशक, शिवाबावनी, अलंकार प्रकाश।
- बिहारी - - सतसई।
- देव - - भावविलास, रस विलास, कुशल विलास, प्रेम तरंग, काव्य रसायन,
- घनानन्द - - वियोग बेलि, सुजान हित प्रबन्ध, प्रीति पावस, कृपाकन्द निबन्ध।
- बोधा - विरह वारीश, इश्कनामा।
- पद्माकर - पद्माभरण, जगद्विनोद, गंगालहरी, प्रबोध पचासा, कवि पच्चीसी।
- केशव - रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रसिकप्रिया, विज्ञान गीता,

केशव को रीतिकाल का पहला कवि तथा चिन्तामणि को रीतिकाल का प्रवर्तक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने माना है। केशव को कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है। उन्हें सर्वाधिक सफलता संवाद निरूपण में मिली है।

रीतिकालीन नाटक

- जसवंत सिंह - प्रबोध चंद्रोदय नाटक
- नेवाज - शकुंतला नाटक
- देव - - देवमाया प्रपंच नाटक

- ब्रजवासी दास - प्रबोध चंद्रोदय नाटक
- सोमनाथ – - माधव विनोद नाटक

हिंदी के प्रसिद्ध कवि एवं उनकी रचनाएँ

साहित्यकार	प्रमुख रचनाएँ
तुलसीदास	रामचरितमानस, विनय पत्रिका, कवितावली, गीतावली, दोहावली, जानकी मंगल
कबीरदास	बीजक (रमैनी, सबद, साखी)
सूरदास	सूरसागर, साहित्य लहरी, सूर सारावली
जायसी	पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम
बिहारी	सतसई
देव	अष्टयाम, भाव विलास, रस विलास
पद्माकर	पद्मभारण, हितोपदेश, राम रसायन, जगत विनोद
मतिराम	ललिततललाम, चंद्रसार, रसराज, साहित्यकार
चिंतामणि	कविकुल, कल्पतरु, काव्य विवेक
भूषण	शिवाबावनी, शिवराजभूषण, छत्रशाल दशक
घनानंद	सुजान सागर, प्रेम पत्रिका, प्रेम सरोवर, वियोग बोलि, इश्कता

भारतेन्दु हरिश्चंद	अन्धेर नगरी, प्रेमफुलवारी, प्रेम प्रलाप, श्रृंगार लहरी, सत्य हरिश्चन्द्र
मैथिलीशरण गुप्त	साकेत, यशोधरा, भारत भारती, सिद्धराज, द्वापर, पंचवटी
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	परिमल, तुलसीदास, अनामिका, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला
महादेवी वर्मा	निहार, रश्मि, नीरजा, दीपशिखा, सांध्यगीत, पथ के साथी
धर्मवीर भारती	अँधा युग, कनुप्रिया, गुनाहों का देवता, सूरज का सातवां घोड़ा, ठंडा लोहा
चंदबरदाई	प्रथ्वीराज रासो
केशवदास	रामचंद्रिका, कविप्रिया, रसिकप्रिया, विज्ञानगीता
रहीम	रहीम दोहावली, बरवै, नायिका भेद, मदनाष्टक, रास पंचाध्यायी, नगर शोभा
मीराबाई	मीरा पदावली, गीतगोविन्द, नरसीजी-रो-माहेरो, राग सोरठ
सुमित्रानंदन पन्त	युगवाणी, वीणा, कला और बूढा चाँद, पल्लव, गुंजन, चिदंबरा, उत्तरा
रामधारी सिंह दिनकर	कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, रेणुका, बापू, रसवंती, हुंकार
माखनलाल चतुर्वेदी	हिमकिरीटिनी, हिम, युग चरण, समर्पण, हिमतरंगिनी
हरिवंश राय बच्चन	मधुशाला, मधुबाला, क्या भूलूँ क्या याद करूँ, मधु कलश, बुद्ध और नाचघर, बंगाल का काल
दलपति विजय	खुमानरासो

नरपति नाल्ह	वीसलदेव रासो
जगनिक	परमालरासो
सारंगधर	हम्मीर रासो
रामनरेश त्रिपाठी	पथिक मिलन, स्वपन, मानसी, ग्राम्य गीत
अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔधजी	प्रियप्रवास, वैदेही वनवास, चोखे चौपदे, रस कलश
जयशंकर प्रसाद	कामायनी, झरना, आँसू, लहर, कामना, कल्याणी, स्कंदगु, विशाख, आकशदीप
रामकुमार वर्मा	संकेत, एकलव्य, उत्तरायण, निशीथ, आकाश गंगा, चित्तौड़ की चिता
गजानन माधव मुक्तिबोध	चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी-भूरी खाक धूल, नये साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, विपात्र, एक साहित्यिक की डायरी, काठ का सपना

हिंदी के नाटक और उनके लेखक

नाटक / कृति	लेखक / नाटककार
अंधेर नगरी	भारतेन्दु हरिश्चंद्र
अंधा युग	धर्मवीर भारती
एक और द्रोणाचार्य	शंकर शेष

कबीरा खड़ा बाज़ार में	भीष्म साहनी
महाभोज	मन्नू भंडारी
कोर्ट मार्शल	स्वदेश दीपक
अषाढ़ का एक दिन	मोहन राकेश
रामायण महानाटक	प्राणचंद चौहान
कृष्ण सुदामा नाटक	शिवनंदन सहाय
ध्रुवस्वामिनी	जयशंकर प्रसाद
आषाढ़ का एक दिन	मोहन राकेश
बकरी	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

हिंदी की प्रमुख पत्रिकाएं एंव उनके संपादक

पत्रिका / मैगजीन	संपादक / लेखक
कवि वचन सुधा	भारतेन्दु हरिश्चंद्र
हरिश्चंद्र मैगजीन	भारतेन्दु हरिश्चंद्र
हरिश्चंद्र चन्द्रिका	भारतेन्दु हरिश्चंद्र
आनन्द कादम्बिनी	बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन

हिन्दी प्रदीप	पं. बालकृष्ण भट्ट
ब्राह्मण	पं. प्रतापनारायण मिश्र
सरस्वती	आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
समालोचक	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
इन्दु	अम्बिका प्रसाद गुप्त
मर्यादा	कृष्णकान्त मालवीय
प्रभा	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
साहित्य सन्देश	गुलाबराय
कादम्बिनी	राजेन्द्र अवस्थी
धर्मयुग	धर्मवीर भारती
साप्ताहिक हिन्दुस्तान	मनोहर श्याम जोशी

भाषा शिक्षण शास्त्र

भाषा अधिगम एवं अर्जन

भाषा अर्जन

भाषा अर्जन एक ऐसी प्रक्रिया है। जिसके अंतर्गत बच्चा अपने आस पास के वातावरण, परिवार में रहकर भाषा को सीखता है । वह दूसरो का अनुकरण करके भाषा को सीखता है। यह

एक प्राकृतिक प्रकिया है। इसके लिए कोई औपचारिक साधन की आवश्यकता नही पड़ती है। यह एक प्रकार से मातृ भाषा या क्षेत्रीय भाषा होती है।

भाषा अर्जन से संबंधित महत्वपूर्ण बिंदु

- भाषा अर्जन की प्रक्रिया सहज और स्वभाविक होती हैं।
- इसमें किसी व्याकरण की आवश्यकता नहीं होती हैं ।
- भाषा अर्जन में सर्वाधिक महत्त्व परिवार व समाज का होता हैं।

भाषा अधिगम

- अधिगम का तात्पर्य होता है सीखना। किसी भी प्रकार के अधिगम की प्रक्रिया जीवनभर चलती रहती है। इसमें औपचारिक साधनों का प्रयोग किया जाता है।
- भाषा अधिगम में नियम और व्याकरण का प्रयोग किया जाता है।
- इसे द्वितीय भाषा के नाम से जानते है ।

भाषा अधिगम से संबंधित तथ्य

- इसमें भाषा के नियम सीखे जाते हैं।
- भाषा अधिगम औपचारिक शिक्षा के द्वारा किया जाता हैं।
- भाषा अधिगम विद्यालय में प्रारम्भ होता हैं।
- भाषा अधिगम में बच्चों को प्रयास करना पड़ता हैं। इसमें व्याकरण की आवश्यकता होती हैं।
- भाषा अधिगम में शिक्षक, विद्यालय पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तके, शिक्षण पद्धतियाँ आदि की भूमिका रहती हैं।

अधिगम के प्रकार

- **क्रियात्मक अधिगम** - क्रियात्मक अधिगम में सीखने के लिए क्रियाओ के स्वरूप और क्रियाओ की गति पर ध्यान दिया जाता है।
- **शाब्दिक या वाचिक अधिगम** - शाब्दिक या वाचिक अधिगम या सीखने में संकेतो, चित्रों, शब्दों, अंको, आदि के माध्यम से सीखना होता हैं।

- **विचारात्मक अधिगम** - विचारात्मक अधिगम में व्यक्ति समाज में दैनिक जीवन अनुभवो को देख कर या सुनकर और विचार करके सीखा जाता हैं।

भाषा अधिगम एवं अर्जन के संदर्भ में विद्वानों के विचार

- वाइगोत्स्की के अनुसार- बच्चों की भाषा समाज के साथ सम्पर्क का ही परिणाम हैं।
- पियाजे के अनुसार- भाषा अन्य संज्ञानात्मक तंत्रो की भाति परिवेश के साथ अन्तःक्रिया के माध्यम से ही विकसित होती हैं।
- चॉम्स्की के अनुसार - "भाषा अर्जन की क्षमता बालकों में जन्मजात होती है और वह भाषा की व्यवस्था को पहचानने की शक्ति के साथ पैदा होता है । "

भाषा शिक्षण के सिद्धांत

- **अनुबन्ध के सिद्धांत या साहचर्य का सिद्धांत :-** शैशवावस्था मे बच्चे किसी शब्द की पहचान किसी वस्तु या व्यक्ति से उस शब्द का साहचर्य (सम्बन्ध) स्थापित करके सीखते हैं। अर्थात शैशवावस्था मे सीखने की प्रक्रिया मूर्त होती है।

  जैसे :- पानी कहने के साथ-साथ जब बच्चे को पानी दिया जाता है तो वह बच्चा धीरे- धीरे पानी शब्द व पानी वस्तु के बीच सम्बन्ध स्थापित करके उसे समझने लगता है।

- **अनुकरण का सिद्धांत :-** इस सिद्धांत का प्रयोग बालक के आरम्भिक शिक्षा मे प्रभावी होता है । इसके अन्तर्गत बालक अपने परिवार, समाज आदि का अनुकरण (नकल करके) करके सीखता है। इस तरह के अधिगम में भाषा का गुण-दोष समाज, परिवार आदि पर निर्भर करता है।
- **अभिप्रेरणा एवं रूचि का सिद्धांत या पूनर्बलन का सिद्धांत :** किसी कार्य की सफलता हमे अभिप्रेरित करती है कि हम और बेहतर कार्य करे। और किसी कार्य की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम उस कार्य मे कितनी रूचि लेते है अर्थात बालक का शिक्षा के प्रति रूचि और उत्साह उसे सीखने के लिए प्रेरित करती है। अत: शिक्षण सम्बन्धी पाठ्य सामग्री, पाठ्-वस्तु आदि का निर्माण व चयन बच्चों के रूचि के अनुसार होना चाहिए एवं उसे सदैव सीखते रहने के लिए अभिप्रेरित करते रहना चाहिए ।

- **क्रियाशीलता का सिद्धांत :** यह सिद्धांत करके सीखने पर बल देता है। जब बालक किसी कार्य को स्वत: करके सीखता है तो वह उसे जल्दी और आसानी से सीख व समझ लेता है। अत: बालको को सदैव खुद से करके सीखने के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराना चाहिए।
- **अभ्यास का सिद्धांत:-** किसी भी चीज़ को सीखने के लिए अभ्यास सबसे महत्वपूर्ण होता है क्यूंकि उसी से वह हमारे व्यवहार में आती है । भाषा प्रयोग के अधिक से अधिक अवसर मिलने से बच्चों का भाषा विकास जल्दी हो जाता है।
- **आवृत्ति का सिद्धांत :-** भाषा सीखने में आवृत्ति का बहुत महत्व है। सीखी हुई बात को जितना अधिक दोहराया जाएगा वह उतने ही अधिक देर तक याद रहेगी। इसलिए भाषा शिक्षण में पुनरावृत्ति पर भी विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता होती है।
- **अनुपात और क्रम का सिद्धांत:-** भाषा कौशल के चारो प्रारूपो (श्रवण, वाचन, पठन एवं लेखन) मे निपुणता के लिए अभ्यास क्रम मे समान अनुपात बनाये रखने पर जोर देता है।

भाषा के कार्य एवं इसके विकास में बोलने एवं सुनने की भूमिका

भाषा के कार्य

- **अभिव्यक्ति का साधन :-** भाषा व्यक्ति को अपनी आवश्यकता, इच्छा, भावनाएँ आदि अभिव्यक्ति करने में सहायता करती है।
- **सामाजिक संबंध स्थापित करने में सहायक :-** सामाजिक संबंध बनाने के लिए हम भाषा का प्रयोग करते हैं।
- **भाषा मानव विकास का मूल आधार है :-** भाषा की शक्ति के माध्यम से ही मनुष्य प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ है भाषा के अभाव में मनुष्य विचार नहीं कर सकता और विचार के अभाव में वह अपने ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति भी नहीं कर सकता है
- **ज्ञान की प्राप्ति में सहायक :-** नये ज्ञान की प्राप्ति के लिए भाषा बहुत ही आवश्यक हैं।
- **शिक्षा प्राप्ति में सहायक :-** शिक्षा प्राप्त करने के लिए भाषा की आवश्यकता होती हैं।

- **भाषा मानव सभ्यता एवं संस्कृति की पहचान है :-** जैसे-जैसे मानव समाज ने अपनी भाषा में प्रगति की वैसे वैसे उसकी सभ्यता एवं संस्कृति में विकास हुआ है ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति हुई और श्रेष्ठ साहित्य का भी सृजन हुआ है।

भाषा विकास में सुनने की भूमिका

- बच्चा अपने परिवार व समाज के लोगो को बोलते हुए सुनता है तथा उनका अनुकरण करता हैं। और बोलने की कोशिश करता है।
- सुनने के माध्यम से बच्चे में शुद्ध उच्चारण करने के कौशल का विकास होता है सुनने के माध्यम से ही बच्चा बोलने में आने वाली उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को दूर करने में सफल होता है।
- सुनने के माध्यम से ही एक बालक के शब्द भंडार में वृद्धि होती है जिससे उसकी भाषा विकास में भी वृद्धि होती है।
- सुनना, ध्वनि के विभेदीकरण का सबसे अच्छा माध्यम है इसके द्वारा बालक स्वर के उतार-चढ़ाव को सीख जाता है ।
- सुनने के माध्यम से बच्चा दूसरों की भावनाओं, विचारो को जान पता है ।
- सुनना अन्य भाषा कौशलों के विकास में भी बहुत सहायक होता है जैसे वाचन कौशल, लेखन कौशल के विकास में

भाषा विकास में बोलने की भूमिका

- बोलकर हम अपनी भावनाओं तथा विचारो को अभिव्यक्त करते हैं।
- बोलने से ही बच्चा शुद्ध उच्चारण सीखता हैं।
- बोलकर ही बच्चा कुशलता भाषा प्रवाह प्राप्त करता हैं।
- बात चीत के द्वारा सामाजिक संबंधों का निर्माण होता हैं

भाषा अधिगम में व्याकरण की भूमिका

- विद्यार्थियों को शुद्ध उच्चारण की शिक्षा प्रदान करना ।
- विद्यार्थियों में भाषा की अशुद्धता को समझने की शक्ति का विकास करना ।

- छात्रों को वाक्य रचना के नियम एवं विराम चिन्हों का शुद्ध प्रयोग आदि का ज्ञान कराना
- अधिगम में व्याकरण की भूमिका से बच्चो के चारो भाषा कौशल का विकास होता है।
- भाषा का शुद्ध प्रयोग करने तथा भाषा में दक्षता प्राप्त करने में व्याकरण मुख्य भूमिका निभाती है।
- विद्यार्थियों को विभिन्न ध्वनि का ज्ञान देना ।
- यह बच्चों में भाषा संबंधी अभिव्यक्ति का विकास करने में भी सहायक है ।
- यह छात्रों को लेखन शैली में मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रयोग करने का शिक्षण देकर उनके लेखन कौशल में विकास करने में सहायक है।
- व्याकरण से छात्रों में विभिन्न नए नए शब्दों की समझ विकसित हो जाती है।
- यह छात्रों को गद्य पद्य में अंतर समझा कर उनके लेखन कौशल का विकास करने में सहायक है।
- व्याकरण छात्रों के लेखन में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, प्रत्यय, उत्तर, तथा तत्सम शब्द, तद्भव शब्द आदि के प्रयोग से उनके लेखन कौशल में विकास करने में सहायक है व्याकरण विधियों को शुद्ध सूक्ति, लोकोक्ति, मुहावरे आदि का अर्थ निकालने के योग्य बनाता है।

व्याकरण की शिक्षण विधि

- **आगमन विधि :-** इस विधि में अनुभवों, उदाहरणों तथा प्रयोगों का प्रत्यक्ष अध्ययन करके नियम बनाए जाते हैं। यह शिक्षण पद्धति "छात्र- केंद्रित" पद्धति है, जो छात्रों को "करकर सीखने " पर जोर देती है । यह एक मनोवैज्ञानिक तरीका है। इस विधि में कुछ शिक्षण सूत्रों का पालन किया जाता है जैसे :- ज्ञात से अज्ञात की ओर, सरल से कठिन की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर, स्थूल से सूक्ष्म की ओर, सामान्य से विशिष्ट की ओर।
- **निगमन विधि :** इस पद्धति में विद्यार्थियों को पहले नियमों का ज्ञान दिया जाता है, फिर उन नियमों को एक "उदाहरण" देकर समझाया जाता है। इस पद्धति को "शिक्षक-केंद्रित" विधि कहा जाता है जिसमें शिक्षक सभी नियमों को पढ़ाता है। इस विधि में कुछ शिक्षण सूत्रों का पालन किया जाता है जैसे- अज्ञात से अज्ञात की ओर, अमूर्त से मूर्त की ओर, सूक्ष्म से स्थूल की ओर, नियम से उदाहरण की ओर ।

अनुकरण विधि

- इस विधि में बालक अनुकरण करके सीखता है इस लिए इस विधि को अनुकरण विधि कहा जाता है।
- इस विधि में बालक अपने शिक्षक का अनुकरण (नकल) करके लिखना, पढ़ना व नवीन रचना करना सीखता है।
- इस विधि के अन्तर्गत बालक शिक्षक के उच्चारण को सुनकर वाचन करना सीखते हैं।
- पहले शिक्षक बोलता है, फिर बच्चे उसका अनुसरण करते है ।

व्याख्यान विधि

व्याख्यान विधि में किसी तथ्य, विषय की व्याख्या की जाती है । व्याख्यान विधि को शिक्षण की सबसे प्राचीन विधि माना जाता है। इस विधि में शिक्षक की भूमिका प्रमुख होती है इसलिए इसे शिक्षक केंद्रित शिक्षण विधि मानी जाती है।

भाषा संसर्ग विधि

यह एक व्याकरण शिक्षण की विधि है। इस विधि में रचनाओं के माध्यम से व्याकरण का ज्ञान दिया जाता है। प्राथमिक कक्षाओं हेतु यह विधि काम में ली जाती है। इस विधि के द्वारा छात्रों को अच्छे लेखन की पुस्तकों के माध्यम से व्याकरण का ज्ञान दिया जाता है।

कक्षा-कक्ष में बहुभाषिकता एक संसाधन के रूप में

- बहुभाषिक कक्षा विद्यार्थियों के शब्द भण्डार में वृद्धि करती है। बच्चे अपने विचारों को अपनी मातृ भाषा में सहज रूप से व्यक्त करते है जिससे उनके मौखिक कौशल का विकास होता है। बहुभाषिकता का गुण बच्चों में रचनात्मकता का विकास करने में सहायक होता है।
- कक्षा में विभिन्न भाषाओं का प्रयोग करना सांस्कृतिक आदान-प्रदान का भी माध्यम है। भिन्न-भिन्न भाषाओं के प्रयोग करने से सभी छात्रों को एक-दूसरे की भाषा समझने का अवसर मिलता है तथा वह अपनी मातृभाषा का सम्मान करने के साथ ही दूसरों की भाषाओं एवं संस्कृतियों का सम्मान करना सीखते हैं।

- बहुभाषिक क्षमता संज्ञानात्मक वृद्धि, सामाजिक सहिष्णुता, विस्तृत चिन्तन और बौद्धिक उपलब्धियों के स्तर को बढ़ाती है, इसलिए भाषाओं को विद्यालयों में एक संसाधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।
- अलग-अलग भाषिक पृष्ठभूमियों से होने के कारण बच्चों के शब्दों व उनके उच्चारण में भिन्नता पाई जाती है, इसलिए भाषिक पृष्ठभूमि के आधार पर किसी को पीछे नहीं छोड़ा जा सकता। बच्चो की भाषा विविधता को एक संसाधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।
- इस बात के प्रमाण भी मिले हैं कि द्वि-भाषी बच्चों की वैचारिक क्षमता अन्य बच्चों की तुलना में अच्छी होती है।

कक्षा-कक्ष में बहुभाषिकता एक चुनौती के रूप में

- **बच्चों पर क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव :-** भारत एक बहुभाषी देश है। विभिन्न क्षेत्रों की अपनी भाषा होती है और क्षेत्रीय भाषाओं का छात्रों पर प्रभाव पड़ता है, जो शिक्षण प्रक्रिया में एक चुनौती है।
- **छात्रों में भाषाई कौशल विकसित करने की चुनौती:-** भाषाई विविधता के कारण छात्रों को भाषा कौशल के विकास में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, क्योंकि क्षेत्रीय भाषा के प्रभाव का भाषाई कौशल पर भी प्रभाव पड़ सकता है।
- **शिक्षक के लिए बहुभाषा की चुनौती :-** यदि किसी शिक्षक को अपने क्षेत्र से दूर किसी अन्य क्षेत्र में पढ़ाने के लिए कहा जाता है जहां वह शिक्षक वह भाषा नहीं जानता जो उस क्षेत्र में बोली जाती है, तो वहां शिक्षक द्वारा बच्चो को पढ़ाना एक चुनौती होती है।
- **भाषा के प्रति बच्चों की रुचि और योग्यता का अभाव :-** भाषा शिक्षण की समस्याओं में से एक समस्या यह है कि छात्रों में भाषा के प्रति रुचि और प्रवृत्ति की कमी होती है, जिससे भाषा शिक्षण का कार्य अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
- **अधिक भीड़-भाड़ वाली कक्षाएँ:-** अधिक भीड़-भाड़ वाली कक्षाएँ आमतौर पर शिक्षक की भाषा को प्रभावी ढंग से पढ़ाने की क्षमता को कम कर देती हैं और शिक्षार्थियों के भाषा शिक्षण को प्रभावित करती है।
- **अध्ययन सामग्री की कमी :-** भाषा विविधता वाली कक्षा में भाषा शिक्षण के लिए अध्ययन सामग्री की कमी भी एक समस्या है।

भाषा कौशल

- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में अन्य व्यक्तियों से सम्प्रेषण स्थापित करने के लिए वह बोलकर या लिखकर अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त करता है तथा सुनकर या पढ़कर दूसरो के विचारों को ग्रहण करता है।
- इस प्रकार भाषा के दो अभिव्यक्तात्मक कौशल है बोलना और लिखना इन दोनों माध्यम से हम अपने विचारो को अभिव्यक्त कर सकते है । और भाषा के दो ही ग्रहणयात्मक कौशल है सुनना और पढ़ना इन दोनों माध्यम से हम दुसरो के विचारो या उनकी बातो को ग्रहण कर सकते है । भाषा से सम्बन्धित इन चारों क्रियाओं के प्रयोग करने की क्षमता को भाषा कौशल कहा जाता है।
- इनका विकास एवं इनमें दक्षता प्राप्त करना ही भाषा शिक्षण का उदेश्य है । भाषा शिक्षण के लिए आवश्यक चारों कौशल परस्पर एक-दूसरे से अन्तःसम्बन्धित होते हैं। प्रत्येक कौशल का विकास किसी न किसी रूप में एक-दूसरे पर निर्भर करता है।
- भाषा के चारो कौशल क्रम से नहीं सीखे जाते बल्कि सभी एक साथ सीखे जाते है। जैसे बच्चा सुनने के साथ- साथ बोलना भी सीखता है । और पढ़ने के साथ- साथ लिखना भी सीखता है।

भाषा कौशल को चार प्रकारों में विभाजित किया गया है

- श्रवण कौशल (सुनकर अर्थ ग्रहण करने का कौशल
- वाचिक या मौखिक अभिव्यक्ति कौशल (विचारों को बोलकर व्यक्त करने का कौशल)
- पठन कौशल (पढ़कर अर्थ ग्रहण करने का कौशल)
- लेखन कौशल (विचारों को लिखकर व्यक्त करने का कौशल)

1. श्रवण कौशल (सुनना) :- भाषा को श्रवण कौशल के माध्यम से ग्रहण किया जाता है। केवल सुनना मात्र ही श्रवण कौशल नहीं है बल्कि वक्ता या प्रवक्ता की बात को सुनकर उसके अर्थ को उसी प्रकार ग्रहण करना जिस प्रकार वो बात अभिव्यक्त की जा रही है श्रवण कौशल कहलाता है।

2. वाचन कौशल (बोलना) :- अपनी बात या विचारों को दूसरो के सामने प्रकट या अभिव्यक्त करना वाचन (बोलना) कौशल कहलाता है वाचन कौशल तभी प्रभावी माना जाएगा जब हम

अपनी बात या विचारो को इस प्रकार से अभिव्यक्त करे की सुनने वाला हमारी बात को अच्छे से समझ जाए और उस पर इसका प्रभाव हो तो ये एक अच्छे वाचन कौशल का उदहारण है।

3. पठन कौशल (पढ़ना) :- किसी विषय को पढ़कर उसके अर्थ को ग्रहण करना पठन कौशल कहलाता है, श्रवण की अपेक्षा पठन कौशल से स्थाई ज्ञान की प्राप्ति होती है ।

पठन दो प्रकार का होता है-

- सस्वर पठन ।
- मौन पठन ।

4. लेखन कौशल (लिखना) :- अपने विचारो या बातो को लिखकर अभिव्यक्त करना लेखन कौशल कहलाता है। इस कौशल में भाषा को स्थायित्व दिया जाता है और इसमें वर्तनी या शुद्धता को अत्यधिक महत्व दिया जाता है।

भाषा शिक्षण में मूल्यांकन

मूल्यांकन

- सीखने-सिखाने की निश्चित अवधि के बाद बच्चो की वास्तविक उपलधि स्तर को जांचना मूल्यांकन कहलाता है। मूल्यांकन पठन-पाठन प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा है। यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है आकलन और मूल्यांकन दोनो का उद्देश्य बच्चों की क्षमता अनुभूति तथा अधिगम का मापन करना होता है ।
- आकलन की प्रक्रिया मूल्यांकन करने के लिए की जाती है। अर्थात् 'आकलन' मूल्यांकन के दौरान होने वाली प्रक्रिया है । आकलन एक संक्षिप्त प्रक्रिया है और मूल्यांकन एक व्यापक प्रक्रिया है । आकलन के बाद मूल्यांकन किया जाता है।

मुल्यांकन के उद्देश्य

- बच्चों में अपेक्षित व्यवहार एवं आचरण परिवर्तन की जांच करना ।
- बालको की योग्यताओं, कुशलताओं, रुचियों आदि का पता लगाना एवं उनके अनुसार शिक्षण विधि को अपनाना।

- इससे अध्ययन और अध्यापन दोनों का मापन कर सकते है। विद्यार्थियों के भाषायी कौशलों की प्रगति का आकलन करना।
- बालको के चहुमुंखी विकास की निरन्तर गति प्रदान करता है। उपचारणात्मक शिक्षण प्रदान करना।
- विद्यार्थियों का सतत मूल्यांकन करके भाषा शिक्षण में आने वाली कठिनाइयों को दूर करना।
- बच्चो की अधिगम में होने वाली कठिनाइयों का पता लगाना। और उन्हें दूर करने की सही रणनीति बनाना।

मूल्यांकन का महत्व

- शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक है!
- बच्चों को अध्ययन की ओर अग्रसित करता है।
- बच्चों की कमजोरियों को जानने में सहायक होता है। बच्चों की प्रगति में सहायक है।
- शैक्षिक व व्यावसायिक मार्गदर्शन में सहायक है।

मूल्यांकन के प्रकार

- **रचनात्मक/निर्माणात्मक मूल्यांकन :-** बच्चों की लगातार प्रतिपुष्टि (Feedback) के लिए रचनात्मक मूल्यांकन सहायक है। रचनात्मक मूल्यांकन से अध्यापक पढाते समय यह जाँच करते है कि बच्चो ने ज्ञान को कितना अर्जित किया है। रचनात्मक मूल्यांकन पाठ के बीच में से किया जाता है।
- **निदानात्मक मूल्यांकन :-** बच्चो को अधिगम (सीखने) के दौरान होने वाली कठिनाइयों का पता लगाना ओर उन कठिनाइयों के कारण का पता लगाना निदानात्मक मूल्यांकन कहलाता है।
- **योगात्मक मूल्यांकन :-** योगात्मक मूल्यांकन सत्र के अंत में होता है। अध्यापक द्वारा पढ़ाने के बाद ये देखना कि बच्चों ने ज्ञान को कितना ग्रहण किया है योगात्मक मूल्यांकन कहलाता है। जैसे - किसी पाठ को पढाने के बाद जब अध्यापक बच्चों से प्रश्न करता है तो वह योगात्मक मूल्यांकन कहलाता है।

बच्चों की भाषा का आकलन करने के लिए उचित तरीके

- बच्चों द्वारा विभिन्न सन्दर्भों में भाषा प्रयोग के अवसर देना ।
- बच्चो से प्रश्न पूछना और पढ़ी गई सामग्री पर उनसे प्रतिक्रिया व्यक्त करवाना।
- बच्चो से उनके अपने अनुभवों को लिखवाना ।
- सुनी गई कहानी को बच्चो से अपने शब्दों में लिखवाना ।
- बच्चों के भाषा-प्रयोग का अवलोकन करना ।
- बच्चों को चित्र वर्णन और प्रश्न पूछने के अवसर देना ।

पोर्टफोलियो

- पोर्टफोलियो एक प्रकार की फाइल होती है जिसमे किसी बच्चे के एक निष्चित अवधि में किये गए कामो का संग्रह (collection) होता है।
- इसमें बच्चे की उपलब्धियों, प्रगति और कमियों को भी रखा जाता है।
- पोर्टफोलियो से बच्चे की महत्वपूर्ण जानकारियाँ मिलती है। जैसे - व्यक्तिगत, पारिवारिक शैक्षणिक/सहशैक्षिणिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक जानकारी आदि ।
- बच्चो के पोर्टफोलियो बनाने का ये उद्देश्य होता है की इसकी सहायता से उनका मूल्याँकन करना आसान हो जाता है।

समग्र एवं सतत मूल्यांकन

- बच्चों के लिए नि: शुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम (RTE-2009) के अनुसार C. C.E. को प्रत्येक बच्चे की प्रारंभिक शिक्षा पूरी होने तक लागू किया जाए ।
- C. C. E. में सतत का अर्थ है कि बच्चो के सीखने मैं कहाँ-कहाँ कमी रह गई है जिसके आधार पर सीखने में सुधार के लिए शिक्षक उचित समय पर आवश्यक कदम उठा सकता है साथ में यह भी पता लगा सकता है कि बच्चा सीखने में कहाँ कठिनाई का अनुभव कर रहा है। C.C.E. के दुसरे घटक समग्र मूल्यांकन का अर्थ बच्चे में सर्वांगीण प्रगति के बारे में जानकारी प्राप्त करने से है।

उपचारात्मक शिक्षण

उपचारात्मक शिक्षण निदानात्मक परीक्षण के बाद आता है क्योंकि नैदानिक परीक्षण के द्वारा पहले छात्रों की अधिगम में होने वाली कठिनाइयों की जानकारी प्राप्त की जाती है और उसके बाद उपचारात्मक शिक्षण के द्वारा उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाता है।

उपचारात्मक शिक्षण का महत्व

- बच्चो के सीखने के दौरान आने वाली कठिनाइयों को दूर करने का प्रयत्न किया जाता है।
- बालकों की क्षमता को सही दिशा में मोड़ने में सहायता मिलती है।
- बालकों की व्यक्तित्व संबंधी समस्याओं का निराकरण हो जाता है।
- उपचारात्मक शिक्षण से बच्चो के आत्मविश्वास में वृध्दि होती है।
- छात्रों द्वारा की जाने वाली त्रुटियों में सुधार के साथ-साथ भविष्य में होने वाली त्रुटियों से भी बचाव हो जाता है।
- शिक्षण रोचक उद्देश्य पूर्ण व प्रभावशाली बनाने में सहायता मिलती है ।

शिक्षण सहायक सामग्री

छात्रों में अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न करने व ज्ञान को स्थाई बनाने के लिए शिक्षक को शिक्षण कार्य के दौरान अनेक प्रकार के साधनों का प्रयोग करना पड़ता है अत: जो भी साधन छात्रों के अधिगम में सहायक होते हैं वे सहायक सामग्री या शिक्षण अधिगम सामग्री कहलाते हैं।

शिक्षण सहायक सामग्री के प्रकार

श्रव्य सहायक सामग्री : - इस प्रकार की सामग्री से बच्चे सुनकर ज्ञान को अर्जित करते है। इसके उदाहरण है, रेडियो, टेप रिकॉर्डर, ग्रामोफोन, चल चित्र, आदि ।

दृश्य सहायक सामग्री :- इस प्रकार की सामग्री से बच्चे देखकर ज्ञान को अर्जित करते है। इसके उदाहरण है, श्यामपट्ट, बुलेटिन बोर्ड, फ्लेनील बोर्ड, मानचित्र, ग्लोब, चित्र, रेखाचित्र, कार्टून, मॉडल, पोस्टर, स्लाईड्स, फिल्म स्ट्रीप्स आदि ।

श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्री :- इस प्रकार की सामग्री से बच्चे एक साथ सुनकर और देखकर ज्ञान को अर्जित करते है। इसके उदाहरण है, मोबाइल फ़ोन, टेलीविजन, कंप्यूटर, चलचित्र, नाटक, आदि।

क्रिया सहायक शिक्षण सामग्री :- क्रिया सहायक शिक्षण सामग्री के द्वारा प्राप्त ज्ञान वास्तविक होता है। इनके द्वारा नई नई चीजों का अध्ययन किया जाता है। इससे बालकों को व्यक्तिगत अनुभव की प्राप्ति होती है।

इसके उदाहरण है:

- ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण करना ।
- किसी उद्यान का भ्रमण करना ।
- किसी संग्रहालय का भ्रमण करना ।

गद्यांश - पद्यांश

गद्यांश

हम सांस्कृतिक अस्मिता की बात कितनी ही करें; परंपराओं का अवमूल्यन हुआ है, आस्थाओं का क्षरण हुआ है। कड़वा सच तो यह है कि हम बौद्धिक दासता स्वीकार कर रहे हैं, पश्चिम के सांस्कृतिक उपनिवेश बन रहे हैं। हमारी नई संस्कृति अनुकरण की संस्कृति है। हम आधुनिकता के झूठे प्रतिमान अपनाते जा रहे हैं। प्रतिष्ठा की अंधी प्रतिस्पर्धा में जो अपना है उसे खोकर छद्म आधुनिकता की गिरफ्त में आते जा रहे हैं। संस्कृति की नियंत्रक शक्तियों के क्षीण हो जाने के कारण हम दिग्भ्रमित हो रहे हैं। हमारा समाज ही अन्य-निर्देशित होता जा रहा है। विज्ञापन और प्रसार के सूक्ष्म यंत्र हमारी मानसिकता बदल रहे हैं। उनमें सम्मोहन की शक्ति है, वशीकरण की भी।

अंततः इस संस्कृति के फैलाव का परिणाम क्या होगा? यह गंभीर चिंता का विषय है। हमारे सीमित संसाधनों का घोर अपव्यय हो रहा है। जीवन की गुणवत्ता आलू के चिप्स से नहीं सुधरती। न बहुविज्ञापित शीतल पेयों से। भले ही वे अंतर्राष्ट्रीय हों। पीज़ा और बर्गर कितने ही आधुनिक हों, हैं वे कूड़ा खाद्य । समाज में वर्गों की दूरी बढ़ रही है, सामाजिक सरोकारों में कमी आ रही है। जीवन स्तर का यह बढ़ता अंतर आक्रोश और अशांति को जन्म दे रहा है। जैसे-जैसे दिखावे की यह संस्कृति फैलेगी, सामाजिक अशांति भी बढ़ेगी।

हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का ह्रास तो हो ही रहा है, हम लक्ष्य-भ्रम से भी पीड़ित हैं। विकास के विराट उद्देश्य पीछे हट रहे हैं, हम झूठी तुष्टी के तात्कालिक लक्ष्यों का पीछा कर रहे हैं। मर्यादाएं टूट रही हैं, नैतिक मानदंड ढीले पड़ रहे हैं। व्यक्ति - केंद्रिकता बढ़ रही है, स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है। भोग की आकांक्षाएं आसमान को छू रही हैं। किस बिंदु पर रुकेगी यह दौड़ ?

1. अनुच्छेद के आधार पर बताइए कि हमारी संस्कृति किसकी संस्कृति बनती जा रही है?

(क) उपभोक्तावादी संस्कृति

(ग) अनुकरण की संस्कृति

(ख) आधुनिक संस्कृति

(घ) विज्ञापन की संस्कृति

ANS : 3

2. आज के उपभोक्तावादी युग में किस प्राकर की संस्कृति का विकास हो रहा है? अनुच्छेद के आधार पर बताएं।

(क) दिखावे की संस्कृति

(ग) लालच की संस्कृति

(ख) प्रतिस्पर्धा की संस्कृति

(घ) उपयोगिता की संस्कृति

ANS : 1

3. 'विलासिता की वस्तुओं से आजकल बाजार भरा पड़ा है। इस वाक्य में क्रिया विशेषण है ?

(क) विलासिता

(ख) बाजार

(ग) आजकल

(घ) भरा

ANS : 3

4. 'अस्मिता' शब्द का अर्थ है

(क) अस्तित्व

(ख) पहचान

(ग) उपर्युक्त दोनों

(घ) मानदंड

ANS : 3

5. अन्य को श्रेष्ठ समझकर उसकी (कबौद्धिकता के प्रति बिना आलोचनात्मक दृष्टि अपनाए उसे स्वीकार कर लेना क्या कहलाता है?

(क) छद्म आधुनिकता

(ख) बौद्धिक दासता

(ग) प्रतिस्पर्धा

(घ) दिग्भ्रमित दासता

ANS : 2

6. उपर्युक्त अनुच्छेद में निम्नलिखित में से किस खाद्य पदार्थ को कूड़ा खाद्य की श्रेणी में नहीं रखा गया है?

(क) पीज़ा

(ख) बर्गर

(ग) पनीर

(घ) आलू के चिप्स

ANS : 3

7. आज समाज में विभिन्न वर्गों के जीवन स्तर में बढ़ता अंतर किसको जन्म दे रहा है?

(क) आक्रोश

(ख) अशांति

(ग) उपर्युक्त दोनों

(घ) दिखावा

ANS : 4

8. निम्नलिखित में से कौन सा चिह्न अर्धविराम का चिह्न है?

(क) :

(ख),

(ग).

(घ) ;

ANS : 4

गद्यांश

जीवन में बहुत अन्धकार है और अन्धकार की ही भाँति अशुभ और अनीति है। कुछ लोग इस अन्धकार को स्वीकार कर लेते हैं और तब उनके भीतर जो प्रकाश तक पहुँचने और पाने की आकांक्षा थी, वह क्रमश: क्षीण होती जाती है। मैं अन्धकार की इस स्वीकृति को मनुष्य का सबसे बड़ा पाप कहता हूँ। यह मनुष्य का स्वयं अपने प्रति किया गया अपराध है। उसके दूसरों के प्रति किए गए अपराधों का जन्म इस मूल पाप से ही होता है। यह स्मरण रहे कि जो व्यक्ति अपने ही प्रति इस पाप को नहीं करता है, वह किसी के भी प्रति कोई पाप नहीं कर सकता है। किन्तु कुछ लोग अन्धकार के स्वीकार से बचने के लिए उसके अस्वीकार में लग जाते हैं। उनका जीवन अन्धकार के निषेध का ही सतत उपक्रम बन जाता है।

1. गद्यांश में 'अन्धकार' शब्द किस ओर संकेत करता है?

(1) पाप की ओर

(2) बुराइयों और कठिनाइयों की ओर जाना

(3) अपराधों की ओर

(4) गरीबी की ओर

ANS : 2

2. लेखक ने किसे सबसे बड़ा पाप कहा है?

(1) प्रकाश पाने की क्षीण आकांक्षा

(3) अन्धकार को स्वीकार न करना

(2) मनुष्य का अपने प्रति पाप न करना

(4) अन्धकार को स्वीकार कर लेना

ANS : 4

3. जब व्यक्ति स्वयं के प्रति किए गए अन्याय, शोषण के विरुद्ध आवाज नहीं उठाता, तो

(1) इससे दूसरों के प्रति अन्याय, शोषण को बढ़ावा मिलता है

(2) वह केवल अपने प्रति अन्याय करता है

(3) इससे शान्ति का माहौल बना रहता है

(4) वह दण्ड का अधिकारी बन जाता है

ANS : 1

4. 'अन्धकार का निषेध' किस ओर संकेत करता है?

(1) अन्याय, शोषण, बुराइयों को सदा के लिए समाप्त करना

(2) समाज में फैले अन्धकार को प्रकाश में बदल देना

(3) समाज को अन्धकार से मुक्त कराने के लिए प्रयत्नशील रहना

(4) यह मानना कि समाज में अन्याय, शोषण, बुराइयाँ नहीं हैं

ANS : 4

5. इस गद्यांश का मुख्य उद्देश्य है

(1) अन्धकार और प्रकाश की व्याख्या करना

(2) अन्याय और बुराइयों को दूर करने के लिए प्रेरित करना

(3) तरह-तरह के लोगों की विशेषताएँ बताना

(4) पाप और पुण्य की व्याख्या करना

ANS : 2

6. इस गद्यांश में 'उपक्रम' का अर्थ है

(1) आरम्भ, शुरुआत

(2) तैयारी, योजना

(3) आयोजन, समारोह

(4) व्यवसाय, कार्य

ANS : 4

7. जीवन में बहुत अन्धकार है। रेखांकित अंश में कौन-सा कारक है ?

(1) अपादान कारक

(2) अधिकरण कारक

(3) करण कारक

(4) सम्प्रदान कारक

ANS : 2

8. ---------- और अन्धकार की ही भाँति अशुभ और अनीति है।" वाक्य में निपात है

(1) ही

(2) की

(3) है

(4) और

ANS : 1

(ही, भी, तब, जब इत्यादि हिंदी निपात कहलाते है)

पद्यांश

अन्धकार की गुहा सरीखी उन आँखों से डरता है मन

भरा दूर तक उनमें दारुण दैन्य दुःख का नीरव रोदन।

वह स्वाधीन किसान रहा, अभिमान भरा आँखों में इस का

छोड़ उसे मँझधार आज संसार कगार सदृश बह खिसका।

लहराते वे खेत दृगों में हुआ बेदखल वह अब जिन से

हँसती थी उसके जीवन की हरियाली जिनके तृन-तृन से।

आँखों ही में घूमा करता वह उसकी आँखों का तारा

कारकुनों की लाठी से जो गया जवानी ही में मारा।

बिना दवादर्पन के घरनी स्वरग चली - आँखें आती भर

देख-रेख के बिना दधमँही बिटिया दो दिन बाद गई मर।

1. कवि का मन जिन आँखों से डरता है वे कैसी हैं?

(1) डरावनी आँखें

(2) अन्धकार - सी काली

(3) अन्धकार की गुफा - सी

(4) अन्धकार - सी दारुण

ANS : 3

2. जिन आँखों का वर्णन कवि ने किया है वे किसकी आँखें हैं?

(1) किसान की

(2) अन्धकार की

(3) नीरव रोदन की

(4) स्वाधीन भारत की

ANS : 1

3. किसान की आँखों में अब भी क्या लहराता है?

(1) दैन्य- दुःख का दारुण रोदन

(2) अपने खेत जिनसे वो बेदखल किया गया

(3) स्वाधीनता का अभिमान

(4) वह संसार जो कगार सदृश खिसक गया

ANS : 2

4. इस पद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखि

(1) किसान की पीड़ा

(2) दारुण दुःख

(3) वे आँखें

(4) जीवन का अन्धकार

ANS : 3

5. किसान के बेटे की मृत्यु कैसे हुई ?

(1) कारकुनों द्वारा लाठियों से पीटने के कारण

(2) देख-रेख के अभाव के कारण

(3) दवा - दर्पन के अभाव के कारण

(4) भूख के कारण

ANS : 1

6. 'अँधेरा' शब्द का पर्यायवाची है

(1) तिमिर

(2) तरु

(3) विटप

(4) इनमें से कोई नहीं

ANS : 1

पद्यांश

धीरे से पांव धरा धरती पर किरनों ने,

मिट्टी पर दौड़ गया लाल रंग तलुओं का।

छोटा सा गांव हुआ केसर की क्यारी-सा,

कच्चे घर डूब गये कंचन के पानी में।

डालों की डोली में लज्जा के फूल खिले,

उषा ने मस्ती में फूलों को चूम लिया।

गोरी ने गीतों से सरसों की गोद भरी,

भौरों ने गोरी के गालों को चूम लिया।

1. उपर्युक्त पद्यांश में कवि ने किरणों का मानवीकरण करते हुए उससे _____की तरह चित्रित किया है।

(क) नवयुवती

(ख) नई-नवेली दुल्हन

(ग) मां

(घ) इनमें से कोई नहीं

ANS : 2

2. 'लाल रंग तलुओं का पंक्ति में निम्नलिखित में से कौन सा अलंकार है?

(क) अनुप्रास

(ख) मानवीकरण

(ग) श्लेष

(घ) उत्प्रेक्षा

ANS : 1

3. 'कंचन' शब्द का अर्थ है

(क) सोना

(ख) निर्मल

(ग) उपर्युक्त दोनों

(घ) नवयुवती

ANS : 3

4. मस्ती में फूलों को चूमते हुए किसे दिखाया गया है?

(क) रात को

(ख) युवती को

(ग) सुबह को

(घ) भंवरों को

ANS : 4

5. उपर्युक्त पद्यांश में कवि ने वर्णन किया है

(क) गांव की सुंदरता का

(ग) हरे-भरे खेतों का

(ख) दुल्हन की विदाई का

(घ) सूरज की पहली किरणों के प्रभाव का

ANS : 4

6. निम्नलिखित में से कौन 'लाल' शब्द का एक पर्यायावाची

(क) पीत

(ख) रक्त

(ग) शोणित

(घ) सुर्ख

ANS : 4